राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक – पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[ सम्मान्य संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर ]



— ग्रन्थाङ्क १७ —

अज्ञातकर्तृकः

# नृत्तसङ्ग्रहः



— प्रकाशक —

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

( Rajasthan Oriental Research Institute )

जयपुर ( राजस्थान )

वि० सं० २०१३ ] प्रति ७५० [ मूल्य रू०

# राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक – पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[ सम्मान्य संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर ]





– ग्रन्थाङ्क १७ –


अज्ञातकर्तृकः

# नृत्तसङ्ग्रहः




— प्रकाशक —

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

## राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

( Rajasthan Oriental Research Institute )

जयपुर ( राजस्थान )

विं० सं० २०१३ ] प्रति ७५० [ मूल्य रु०

RĀJASTHĀNA PURĀTANA GRANTHAMĀLĀ
Published by the Government of Rajasthan
A Series devoted to the Publication of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṁśa, Old Rajasthani-Gujarati and Old Hindi works pertaining to India in general and Rajasthan in particular.

★

General Editor
Acharya JINA VIJAYA MUNI, Puratattvacharya
Honorary Member of the German Oriental Society, Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona and Gujarat Sahitya Sabha, Ahmedabad.
Honarary Director, Rajasthan Oriental Research Institute.

No. 17

# NṚTTA SAMGRAHA

( A small treatise on the art of dancing )

★

edited by
Prof. Dr. PRIYABALA SHAH
M. A. Ph. D. (Bombay) D. Litt (Paris)
( Head of the Department of Ancient Indian Culture : Ramanand Arts College, Ahmedabad. )

Rajasthan Oriental Research Institute
Jaipur

1956

अज्ञातकर्तृकः

# नृत्तसङ्ग्रहः




सम्पादिका

डॉ. प्रियबाला शाह, एम्. ए. पीएच्. डी. (बंबई)
डि. लिट् (पेरिस)

( प्राध्यापक, रामानन्द आर्टस् कॉलेज, अहमदाबाद )





—: प्रकाशनकर्ता :—

राजस्थान-राज्याज्ञानुसार

संचालक-राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

( Rajasthan Oriental Research Institute )

जयपुर ( राजस्थान )

विक्रमाब्द २०१३ ] प्रथमावृत्ति ★ मूल्य रू० खिस्ताब्द १९५६

प्रकाशक -
संचालक - राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर, के आदेशानुसार - गोपालनारायण बोहरा ।
मुद्रक -
जयन्ति दलाल, वसंत प्रिण्टींग प्रेस, घीकांटा रोड, अहमदाबाद ।
और
मुकुन्द के. शास्त्री, इला प्रिण्टरी ( वल्लभ मुद्रणालय ) पानकोर नाका, अहमदाबाद ।

## प्रधान संपादकीय वक्तव्य

★

राजस्थान और गुजरात, मालवा आदि प्रदेशोंमें प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थोंके बिखरे हुए एवं जीर्णशीर्ण दशामें जो संग्रह प्राप्त होते हैं उनमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं प्राचीन राजस्थानी-गुजराती भाषामें रचित छोटी बडी ऐसी सैंकडो ही साहित्यिक कृतियां उपलब्ध होती हैं जो अभीतक प्रायः अज्ञात और अप्रसिद्ध हैं। विद्वानोंका लक्ष्य प्रायः अभीतक उन्हीं सुप्रसिद्ध और सुज्ञात ग्रन्थोंके अन्वेषण एवं संशोधनकी तरफ रहा है जो यत्रतत्र यथेष्ट प्रमाणमें उपलब्ध होते हैं। ग्रन्थोंके संपादन और प्रकाशन के विषयमें भी प्रायः यही प्रथा चली आ रही है। सुप्रसिद्ध और सुज्ञात ग्रन्थोंके सिवा छोटी छोटी एवं प्रकीर्ण रचनाओंके विषयमें विद्वानोंका विशेष लक्ष्य नहीं जाता है और इसलिये अभीतक ऐसी रचनाओंके संपादन-प्रकाशनका मुख्य प्रयत्न प्रायः नहींसा हुआ है। हमारे प्राचीन इतिहास एवं सांस्कृतिक सामग्रीकी दृष्टिसे इन फुटकर रचनाओंमें जो ज्ञातव्य छिपे पडे हैं उनकी तरफ हमारा लक्ष्य बिल्कुल नहीं गया है-ऐसा कहा जाय तो कोई अत्युक्तिकी बात नहीं होगी।

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिरका कार्य प्रारंभ करते समय, हमारा मुख्य लक्ष्य इस प्रकारके प्रकीर्ण साहित्यका अन्वेषण, संग्रह, संरक्षण, संशोधन एवं प्रकाशन आदि करनेका रहा है और तदनुसार, राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-माला द्वारा ऐसी अनेकानेक साहित्यिक रचनाओंको, सुयोग्य विद्वानों द्वारा शोधित-संपादित कराकर प्रकाशमें रखनेका आयोजन हमने किया है।

इसी उद्देश्यके आधारानुसार, नृत्तसंग्रह नामक प्रस्तुत लघुकृति राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाके १७ वें मणिके रूपमें प्रकाशित की जा रही है। इस कृतिकी १३ पत्रात्मक एक जीर्ण शीर्ण और अपूर्ण प्रति गुजरात विद्यासभाके संग्रहमें सुरक्षित है जो अहमदाबादके 'गुजरी' नामसे पहचाने जानेवाले -सप्ताहमें एक दफह बजारके फुटपाथ पर लगनेवाले-हटवाडेमें, रद्दी कागज बेचनेवाले कबाडीके पाससे उपलब्ध हुई है। जैसा कि संपादिका विदुषीने अपनी संक्षिप्त प्रस्तावनामें सूचित किया है-इस रचनामें नृत्य-नाट्य विषयक कुछ मुख्य बातोंका वर्णन किया गया है अतः इसका नाम 'नृत्तसंग्रह' रखना समुचित समझा गया है।

इस छोटेसे ग्रन्थमें विशेष लोकप्रिय कतिपय नृत्योंके स्वरूप और प्रकारका वर्णन किया गया है जिनमें भारतके दक्षिण और उत्तर दोनों प्रदेशोंके नृत्यप्रकारोंका समावेश है। दक्षिणके मुख्य द्राविड, तैलंग और कर्णाट देश प्रचलित लोक-

नृत्तोंका, जिनमें मुख्य करके उन उन देशोंकी भाषाके गीतोंके साथ अभिनय किया जाता है, वर्णन किया गया है और उत्तर प्रदेशमें प्रचलित उन नृत्तोंका उल्लेख है जिनमें संस्कृत, मध्यदेशीय (आधुनिक हिन्दी) और पारसीक अर्थात् फारसी भाषाके गीतोंका व्यवहार होता है। यवनलोकोंमें बहुप्रिय जक्कडी नामक नृत्तका भी स्वरूप बताया गया है। ग्रन्थान्तमें पश्चिम एवं उत्तर भारतमें सुप्रसिद्ध दण्डरास (जिसको गुजरातीमें दाण्डिया रास कहते हैं) का उल्लेख किया गया है।

इस प्रकार इस छोटेसे निबन्धमें नृत्यकलाके विशेष लोकप्रिय और लोकप्रसिद्ध प्रकारोंका सुगम और सरल संस्कृतमें जो वर्णन दिया गया है वह इस कलाके अभ्यासियोंको अवश्य मनोरंजक और ज्ञानप्रद सिद्ध होगा।

गुजरात विद्यासभाके प्राचीन ग्रन्थ संग्रहमें अज्ञात एवं उपेक्षित रूपमें पडी हुई प्रस्तुत कृतिके अवलोकनद्वारा इसके महत्त्वको अवगत करके विदुषी डॉ. प्रियबाला शाहने इसका इस प्रकार संशोधन-संपादन कर प्रकाशमें लानेका जो प्रयत्न किया है वह अभिनन्दनीय है।

अनेकान्त विहार
अहमदाबाद.
आषाढशुक्ल ८. वि. सं. २०१३
(१५-७-५६)

मुनि जिनविजय
सम्मान्य संचालक
राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर
जयपुर

# PREFACE OF THE GENERAL EDITOR

There are still hundreds of old manuscripts big and small in Sanskrit, Prakrit, Apabhraṁśa and old Rājasthāni-Gujarāti lying scattered over Rājasthāna, Gujarāta, Mālawā and other regions of our country. Many of these are still unknown and unpublished. Up till now scholars have generally devoted themselves to works which are comparatively bulky, well known and available in great number. The same outlook prevails also amongst publishers of oriental series.

But in addition to those big and well-known works, there are many small ones on a variety of subjects which have not attracted the attention that they deserve. In fact, no major attempt has been made to edit and publish these small works on important subjects. It would be no exaggeration to say that these works which contain important material for the history and culture of our country and which embody not a negligible part of our ancient learning have been mostly neglected, probably because they are in small manuscripts and rare to find.

It has been our endeavour from the very inception of Rājasthāna Oriental Research Institute to search for, collect and preserve mss. of such small works on various subjects and also to edit and publish them. Accordingly we have arranged for critical editions of such works at the hands of competent scholars and their publication in the Rājasthāna Purātana Granthamālā.

In persuance of this object, this small but important work Nṛtta-Saṁgraha is being published in the Rājasthāna-Purātana-Granthamālā as number 17. The ms. of this work which consists of thirteen folios is preserved in the mss. collection of Gujarāta Vidyā Sabhā, Ahmedabad. It would be interesting to know that this and many similar important works were rescued by the Gujarāta Vidyā Sabhā from the vendors of old things in the weekly market of Ahmedabad, called Gujarī.

The title of this work is missing. But as the learned editor has shown, this work treats of dancing and therefore it is appropriately named Nṛtta-Saṁgraha.

In this small work different varieties of old Indian dancing are described. It includes both the Northern and Southern types. In the Southern types are mentioned dances prevalent in Drāviḍa, Telanga and

Karṇāṭaka with the Abhinayas accompanying the songs in their languages. In the Northern, are included those dances which accompany songs in Sanskrit, Madhyadeśiya (modern Hindi) and Pārsīka or Persian. The Jakkaḍi dance - so popular amongst the Yavanas - is also described. At the end of the work is mentioned the well-known Daṇḍa-Rāsa (known in Gujarātī as Dāṇḍiyā Rāsa).

Thus this small work in a concise form gives information about the art of dancing which, it is hoped, will be interesting and useful to students of that art and Indian culture.

Dr. Priyabālā Shah deserves our thanks for discovering this unknown and neglected work from the mss. collection of Gujarāta Vidyā Sabhā and realizing its importance from its perusal for undertaking to edit it for this series.

Anekanta Vihar
Ahmedabad.
15-7-56

Muni Jinavijaya
Hon. Director,
Rajasthan Oriental Research Institute,
JAIPUR.

ष्टं तः सांप्रदायकाः पाद्यानां नादसाम्यं च कृत्वा वदितमानसाः॥ मेलापकं वादयेयुः प्रबंधं गजरं ततः॥ हुः
डुकस्यां [illegible] ध्यांतर्द्वौ तौ दूरी तेस्मति। नर्तको नर्तकी चापि दिक्पालांश्च विधिवित्तु। मातृकामुनि नागांश्च यक्ष
गंधर्वकिंनरान्। गणेनरान्तरतं तंडूं लक्ष्मीवाणी सुमा सुधां। ज्येष्ठाश्चैये गुणैर्वैक्षुं वाग्वात ड्‌ गमाविशेत् नृत्य
मंडपमध्यात् मंगलाकृतिमानतः सप्तसप्तक राक्रांतस्थाने तदंगमुच्यते। इति रंगप्रवेशः॥ तत्र कार्यं द्विध
नृत्तं बंध[illegible] ना[illegible] बंधकं। गत्यादि नियमैर्युक्तं बंधकं नृत्तमुच्यते। अनिबंधत्वं नियमाद्यथा हृष्टा के मोह
था। नृत्वचा [illegible] याणि धुवाडा विडु लागवः ततः परं शब्द चालिर्नाना प्राप्त प्रबंधकाः। स्वरमंडादय
गीतप्रबंधमश्चिंदुजातयः। धरूणां ज्ञातयः पश्चात् कृति ध्रुवपदानि च। दृत्यादि एवं बंधकस्य लक्षणं ध्रुवं
च्यते। मुखं तु पूर्वरंगस्याच्चालिस्तदनु गागतिः। मुखचालिरिति प्रोक्ता नृत्तज्ञैः पूर्वसूरिभिः। चंद्रविने
त्रवौ राष्ट्रवदांग शरदिन्दुवत्। स्वसमग्रुक्रमतानन्त्रा मध्ये पुष्पांजलिं क्षिपेत्। अथ ततः क्षेपणं ज्ञातापी अत
दक्षिणे सत्ता। इष्टेयुरुः स्वयंवाम रंगपी [illegible] गांतरे क्षिपेत्। रंगपीतस्य मध्ये तु ब्रह्मा स्वयमधिष्ठितः। इष्ट

हि। इति रासनृत्यं॥ [illegible]

[ नृत्तसंग्रह द्वितीय तथा अन्त्य पत्रकी प्रतिकृति

# Introduction

The text edited in the present work is based upon a single Ms. in the possession of Gujarat Vidysabha, Ahmedabad.
Ms. No. 868

Name—not given at the end. I have named it *Nṛtta-saṁgraha* as it describes various kinds of Nṛttas.

Author—?

Material—Paper

Script—Devanāgarī

Extent of the Ms.—2 to 13, i. e. 12 folios ( incomplete )

Size of leaves—9·25×4·25 inches

Area of writing—7·5×3·75 inches

Number of lines—10 lines per page

Number of letters—36 to 40 in each line

Writing—fairly uniform and legible

Age—not mentioned. From its appearance, nearly two to three hundred years old.

Begins-Folio No. 1 is missing. The second folio begins-

* * * * छन्तः सांप्रदायकाः ।
वाद्यानां नादसाम्यं च कुर्वाणाहितमानसाः ॥

**Ends**

दण्डैर्विना कृतं नृत्यं रासनृत्यं तदेव हि ।
इति रासनृत्यम् । इत्यनिबन्धनृत्तम् ॥

On comparing this work with the Saṁgīta-ratnākara ( Vol. 2, Page 800, ślo. 1271-72 Ānandāśrama edition ), I found that the verses referred to above are a part of the section on संप्रदाय. The verses that precede are nearly 9 in number. If our Ms. began on the second side of the first folio, it would provide space for this number. I have quoted these verses in the foonote, page 1.

The name and the author of this work are not known. I was tempted to edit it, because it has some noteworthy information to give regarding dancing as it was practised in India in ancient and medieval times. A part of its subject matter agrees with the usual information given in Nṛtya works like संगीतरत्नाकर. However, while explaining technical terms like

चिन्दु कद्दिधक, जक्कडी etc., it traces them to the regions of their origin. This in itself is very interesting. In addition to this, its refefrences to यवन and पारसीक types of dance give this work special importance.

As far as the language is concerned, the author does not, himself, seem to have written pure Sanskrit. So I have not tried to emend the text from the point of view of Pāṇinian grammar. In the case of non-Sanskrit words like चिन्दु, जक्कडी and such others, I have left them as they are without attempting any uniformity in them.

Before concluding, I must not omit to tender my most sincere thanks to revered Āchārya Śrī Muni Jinavijayaji, the Honorary Director of Rajasthan Puratattva Mandir, Jaipur, who is known for the encouragement he gives to young workers in the field of researh. I am greatly indebted to him for not only accepting this work for publication in Rajasthan Puratattva Series, but also for helping me in learning the craft of editing old manuscripts.

I am much indebted to my teacher Prof. R. C. Parikh, for giving much of his valuable time for discussing with me several problems connected with the preparation of the present text. As Director of the institution in which I am working, he was kind enough to get permission to undertake this work from the authorities concerned.

Ahmedabad

1-9-1952.

**Priyabala Shah**

# [ नृत्तसंग्रहः ]

. . . . . . . . . . . . . . . . . . . . . ।

. . . . . . . . . *ष्ठन्तः [1]सांप्रदायिकाः ॥

* यत्रैको मुखरी [2]श्रेष्ठस्तथा प्रतिमुखर्यपि[3] ।
द्वावडावर्जिनौ स्कन्धावर्जिनौ करटाधरौ (?) ॥ १२६३

द्वात्रिंशन्मर्दलधरा वरास्तालधरद्वयम्[4] ।
कांस्यतालधरास्त्वष्टाविष्टाः काहलिकद्वयम् ॥ १२६४

वांशिकौ रसिकौ व्यक्तसुरक्तप्रचुरध्वनी ।
चत्वारो मधुरध्वाना [5]भवन्त्येते करास्तयोः ॥ १२६५

द्वौ मुख्यगायनौ सार्धमष्टभिः सह गायनैः ।
मुख्यगायनिके चाष्टौ सहगायनिकास्तयोः ॥ १२६६

संप्रदायसमुल्लासि पात्रमेकं [6]गुणान्वितम् ।
सर्वेऽमी रूपवन्तः स्युश्चित्रालंकरणान्विताः ॥ १२६७

गीतादिसाम्यनिपुणाः [7]प्रहर्षोत्फुल्लचेतसः ।
उत्तमः संप्रदायोऽसौ लोके कुटिलमुच्यते ।
तदर्धं मध्यमो न्यूनोऽस्मात्कनिष्ठो निगद्यते ॥ १२६८

इति संप्रदायलक्षणम् ॥

अनुवृत्तिर्मुखरिण[8]स्तलयोर्न्यूनपूरणम्
तालानुवृत्तिरित्येते चत्वारः कुटिले गुणाः ॥ १२६९

संप्रदायस्य दोषः स्यादेतद्गुणविपर्ययः ॥ १२७०

इति संप्रदायगुणदोषाः ॥
संगीतज्ञैर्बुधैः सार्धं नायके प्रेक्षके स्थिते ।
प्रविश्य रङ्गभूमिं ते तिष्ठन्तः सांप्रदायिकाः ॥ १२७१

'संगीतरत्नाकर' अ. ७ (आ. सं. सिरीझ)

1 Ms °दायकाः 2 ग. श्रेष्ठः सूच्या प्र° । 3 ख. °पि । द्वौ वामजठरा-बद्धावर्जितौ करटाधरौ (?) । 4 ख. ग. °धराद्वयम्° । 5 ख. °वन्त्यो नरकास्त° । 6 ख. °णाश्रयम् । 7 ग. प्रकर्षो°. 8 °णरसाल°.

वाद्यानां नादसाम्यं च कृत्वाऽवहित[1]मानसाः ।
मेलापकं वादयेयुः प्रबन्धं गजरं ततः ॥ २
कुडुकस्यां ततश्चान्तर्ध्वनौ दूरीकृते सति ।
नर्तको नर्तकी वापि दिक्पालांश्च विधिं विभुम् ॥ ३
मातृकामुनिनागांश्च यक्षगन्धर्वकिन्नरान्[2] ।
गणेशं भरतं तण्डुं लक्ष्मीं वाणीमुमामुषाम् ।
ज्येष्ठाश्च ये गुणैर्विष्णुं नत्वा तद्रङ्गमाविशेत् ॥ ४
नृत्तमण्डपमध्यात् तु मङ्गलाकृति मानतः ।
सप्तसप्तकराक्रान्तस्थानं तद् रङ्गमुच्यते ॥ ५

इति रङ्गप्रवेशः ॥

तत्र कार्यं द्विधा नृत्तं बन्धकं चानिबन्धकम् ।
गत्यादिनियमैर्युक्तं बन्धकं नृत्तमुच्यते ॥ १
[3]अनिबन्धं त्वनियमादथोद्देशक्रमो यथा ।
मुखचालिश्चोरुपाणि धुवाडा बिडुलागवः ॥ २
ततः परं शब्दचालिर्नानाशब्दप्रबन्धकाः ।
स्वरमन्द्रादयो गीतप्रबन्धाश्चिन्दुजातयः ॥ ३
धरूणां ज्ञातयः पश्चात् कति ध्रुवपदानि च ।
इत्युद्दिष्टं बन्धकस्य लक्षणं [4]त्वधुनोच्यते ॥ ४
मुखं तु पूर्वरङ्गः स्याचालितदनुगा गतिः ।
मुखचालिरिति प्रोक्ता नृत्तज्ञैः पूर्वसूरिभिः ॥ ५
चन्द्रत्रिनेत्रवाराष्टवेदाङ्गशरदिक्षु च ।
स्वसव्यक्रमतो नृत्वा मध्ये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥ ६
अग्रतः क्षेपणाद् राजा पीड्यते दक्षिणे सभा ।
पृष्ठे गुरुः स्वयं वामे रङ्गपीठान्तरे क्षिपेत् ॥ ७
रङ्गपीठस्य मध्ये तु ब्रह्मा स्वयमधिष्ठितः ।
इष्टार्थं क्रियते पुष्पमोक्षणं रङ्गमध्यतः ॥ ८
यतः पादस्ततो हस्तो यतो हस्तस्ततस्त्रिकम् ।
पादस्य निर्गमं ज्ञात्वा शेषाङ्गानि नियोजयेत् ॥ ९
इतस्ततोऽर्थपर्याय इङ्गने अङ्गने इति ।
रञ्जकाय वदेत् तत्र यथाताललयोचितम्[5] ॥ १०

1 Ms °वस्थित° 2 Ms °रात्. 3 Ms °न्ध. 4 Ms °न्ध°. 5 Ms °योजि°.

आविद्धवक्त्रहस्ताभ्यां चार्या च समपादया ।
पुरतस्त्रिपदीं गच्छेन्नटवर्यो विलासतः ॥ ११
ततश्चन्द्रे लीनकं च कृत्वा समनखं ततः ।
सविलासं मन्दमन्दं तिर्यक् चालनसुन्दरम् ॥ १२
पार्श्वद्वन्द्वं सुलूनामा चालयेत् तु मुहुर्मुहुः ।
मन्दानिलचलद्दीपशिखेवाङ्गस्य चालनम् ॥ १३
अथवाऽहिफणाकारां सुलूमाहुर्मनीषिणः ।
व्यावर्तितौ लताहस्तौ युगपत् क्रमतो यदि ॥ १४
भवेद् द्विशिखरत्वं च पादौ संयुक्तकुञ्चितौ ।
गात्रं तदनुसारेण नीचं नीचं व्रजेत् तदा ॥ १५
तलसञ्चमनुप्राप्य सूलूवर्तनमाचरेत् ।
भूमेरूर्ध्वस्थितिः [1]कट्यास्तालद्वित्रिचतुष्टयात् ।
तलमध्योर्ध्वसञ्चाख्याः क्रमेण कथिता बुधैः ॥ १६
अङ्गुष्ठमध्यमाङ्गुल्यौ ये हस्तस्य प्रसारिते ।
तदग्रयोरन्तरालं तालमाहुर्मनीषिणः ॥ १७
रागालापानुगां व्यक्तशब्दालापानुसारिणीम् ।
गतिं च सर्वदा कुर्यात् सभाजनमनोहराम् ।
चार्या साम्यर्या सव्यसूची पादोऽग्रतलसञ्चरः ॥ १८
अधस्तलपताकश्च बाहुस्तत्र प्रसारितः ।
शिरोदृक्करपादानां युगपद् रेचनं [2]वदेत् ॥ १९
ततस्तु मध्यसञ्चेन सोत्संधा करिहस्ततः ।
दक्षिणश्चरणस्तस्मान्निष्क्रम्य स्वस्तिकं भजेत् ॥ २०
सूलूचालनकं तत्र तथा नूपुरविद्धिकाम् ।
ततस्तु तलसञ्चेन चतुरस्रं समाश्रयेत् ॥ २१
चतुरस्रौ करौ तत्र सूलूं तत्रापि चालयेत् ।
ततस्तलमुखाभ्यां च चार्या स्वस्तिकया तथा ॥ २२

---

1 Ms कथा°. 2 Ms वयेत्.

तृतीयां दिशमासाद्य [1]तूर्ध्वं सव्येन सव्यतः ।
[2]समां कृत्वा समनखं पूर्ववच्चाङ्गचालनम् ।
वैशाखरेचितं तत्र बाहू तिर्यक्प्रसारितौ ॥ २३
ततः कुलीरिका चार्या द्वितीयं स्थानमाचरेत् ।
मण्डलं स्थानकं तत्र सूलूवर्तनकं तथा ॥ २४
करिहस्तकया चार्या सव्यहस्तिकरेण च ।
उद्वेष्टितेन वामेन रङ्गमध्यं समाश्रयेत् ॥ २५
सभासंमुखतो हस्तौ तौ च तत्क्रियया पुटौ ।
पार्श्वरेचितकं तत्र जानुकुञ्चितकं तथा ॥ २६
मण्डलस्थानकं कृत्वा लताहस्तौ सुलूं तथा ।
वामो यथास्थितः कार्यो दक्षिणस्तु लताकरः
ऊर्ध्वोर्ध्वाङ्गं यथा तत्र तदूर्ध्वं[3] सारयेत् करः ॥ २७
ततस्तलमुखाभ्यां च चार्या स्वस्तिकया तथा ।
सप्तमीं दिशमासाद्य सभां कुर्यात् तु वामतः ॥ २८
द्वितीयायां तृतीयायां रङ्गमध्ये च यत्क्रमम् ।
तत्क्रमं नृत्ततत्त्वज्ञश्चार्वाद्यङ्गविशेषतः ॥ २९
यथाक्रमेण सप्तम्यामष्टम्यां रङ्गमध्यतः ।
नृत्वा चाविद्धवक्त्राभ्यां चार्या चैव मरालया । ३०
चतुर्थीं दिशमासाद्य तत्र स्थानं च मण्डलम् ।
जनितं करणं तत्र सुलूं चापि प्रचालयेत् ॥ ३१
दक्षिणः खटकः कर्णे वामो मुष्टिः स्वपार्श्वतः ।
धनुःकर्षं स्थितावर्त्तचारी तिर्यङ्मुखाख्यया ॥ ३२
षष्ठीं दिशं समागत्य प्रत्यालीढाङ्गचालनम् ।
तत्रैव चतुरस्रं च विप्रकीर्णौ[4] सुलूं तथा ॥ ३३
ततोऽर्धरेचिताभ्यां च चार्या तिर्यङ्मुखाख्यया ।
पञ्चमीं दिशमासाद्य सुलूं समनखं नयेत् ॥ ३४
शुद्धचालिं च तत्रैव [5]कौक्कुटीमिति पाटतः ।
ततोऽञ्जलिकरं कृत्वा शिरोवदनहृत्क्रमात् ॥ ३५

---

1 Ms नूदूर्ध्वं. 2 Ms सभां. 3 Ms नूदूर्ध्वो. 4 Ms °कीर्णौ. 5 Ms कुक्कुट°.

देवं गुरुम् ऋषिं[1] नत्वा चार्या कातरया तथा।
रङ्गमध्यमनुप्राप्य चार्याऽध्यर्द्धिकया समे॥ ३६
तलपुष्पपुटं कृत्वा पुष्पाण्यापूर्य तत्र च।
सव्यापसव्यतः पश्चादग्रादूर्ध्वात् क्रमादिति। ३७
पुष्पाञ्जलिं दर्शयित्वा रङ्गपीठान्तरे क्षिपेत्।
तत्रैवाभिनयेन्नान्दीश्लोकं तद्रागयोजितम्॥ ३८
यथा—भवतां भूतये भूयाद् भवानी भववल्लभा।
अङ्गीकृतसुसङ्गीतभृङ्गी[2] मुदितमानसा॥ ३९

भवतां-पुरोदेशगतेन पताकेन, भूतये-पुरोदेशोदूर्ध्वोत्थिताभ्यामलपल्लवाभ्यां, भूयात्—उद्वेष्टिताधोमुखगतेन पताकेन, भवानी-वामवक्षोरुहतटगतस्वसंमुखगोमुखेन, भव-ललाटगतसूच्यास्येन। वल्लभा-हृदयगतचतुरेण। अङ्गीकृत-मुखस्थकपोतेन। सुसङ्गीत-मुखदेशगतहंसास्येन। भृङ्गी-कम्पितपुरोदेशगतेन त्रिपताकेन। मुदित-पुरोधस्तदूर्ध्वोत्थितेन[3] वामेनालपल्लवेन। मानसा-हृदयगतेन व्यावर्त्तितपरिवर्त्तित-दक्षिणसंदंशेन॥

ततस्तत्रैव शीघ्रेण पार्श्वयोरग्रतः क्रमात्।
कमलवर्त्तनिकामादौ मकरवर्त्तनिकां ततः॥ ४०
मायूरीं भानवीं मैनीं हयलीलां मृगीं तथा।
हंसीं च कुक्कुटीं पश्चात् खञ्जनीं गजगामिनीम्।
दर्शयेयुः क्रमात् [4]तज्ज्ञाः संप्रदायानुसारतः॥ ४१
पताकौ मणिबन्धस्थौ शिथिलौ स्वस्तिकौ पुनः।
मण्डलभ्रमितौ श्लिष्टौ ख्यातौ कमलवर्तनौ॥ ४२
यदा तु मकरो हस्तपुरस्तात् पार्श्वयोरपि।
व्यावर्तनाद् बहिश्चान्तस्तदा मकरवर्तना॥ ४३
बर्हिबर्हकलाकारौ करौ कृत्वोर्ध्वतः क्रमात्।
शनैरुच्चालितौ पादौ मायूरीस्फुरणं ततः॥ ४४
भानोर्गतिरिवालक्ष्ये हस्ताभ्यां मण्डलाकृतिः।
सव्यापसव्ययोरूर्ध्वक्रियया भानवीगतिः॥ ४५

---

1 Ms ऋषि. 2 Ms (भंगी.) 3 Ms °स्थितेन. 4 Ms °तज्ञाः

ह्रदान्तःस्थितपाठीनो यथा वसति वीचिषु ।
पार्श्वयोरुभयोस्तद्वत्क्रियया मैनवीगतिः ॥ ४६

पादपार्श्वयुगे स्थित्वा धरण्यां सञ्चरेद् द्रुतम् ।
मध्ये च स्थीयते तत्र गतिरुक्तानुरङ्गिणी ॥ ४७

चकिताक्षी कुरङ्गी च पश्यन्ती गीतपद्धतिम् ।
आकर्णयन्ती यदि सा हारिणीगतिरीरिता ॥ ४८

मरालीं च पुरस्कृत्वा भावहावादिपूर्वकम् ।
मन्मथोद्दीपना दृष्टिः कथिता हंसिनीगतिः ॥ ४९

युगपत् स्फुरणात् पक्षपादयोः साचिमण्डले ।
मत्तकुक्कुटवद् यत्र कौक्कुटीगतिरीरिता ॥ ५०

त्रिपताकौ करौ कृत्वा [1]जानू सङ्कुच्य शीघ्रतः ।
पादाग्रतश्चरित्वा[2] तु स्थीयते खञ्जनीगतिः ॥ ५१

समपादेन च स्थित्वा मन्दं मन्दं चरेत् ततः ।
गम्भीरश्चाङ्गदृष्टिश्चेद् गजलीलागतिर्मता ॥ ५२

गतीनां सानुकूलत्वं भजेयुश्चरणादयः ।
ततोऽग्रे सव्यहस्ताङ्घ्री युगपत् क्रियया क्रमात् ॥ ५३
वैष्णवं च हयक्रान्तं प्रत्यालीढं[3] च मोक्षणम् ।
कुर्यात् तदा वामहस्तशिखरो हृदि संस्थितः ॥ ५४

पताकोऽधस्तलश्चान्यः स्वपार्श्वे च प्रसारितः ।
चित्रकलासकं तत्र मोक्षे सम्यक् प्रयोजनम् ॥ ५५

इति मुखचालिः ॥

यतिताललयस्थानचारीहस्तात्मकं तु यत् ।
तन्नृत्तमुरुपं प्रोक्तं बुधैर्द्वादशधोदितम् ॥ १
नेरिः करणनेरिश्च भित्रं चित्रं च नत्रकम् ।
अदृष्टपृष्ठतुल्लं च तोलरूपं च सीलुकम् ॥ २
तुल्लं च प्रसरं चैव कर्तरी होलुनामकम् ।
द्वादशेति समाख्याता, अथ लक्षणमुच्यते ॥ ३

1 Ms जानु. 2 Ms तु° 3 Ms °लीढे.

चतुरस्रे स्थितिर्यत्र रासतालश्चिरो लयः ।
रथचक्रैकपादेन परेण च यथोचितम् ॥ ४
गतिः पताकहस्तश्च प्रत्याशं तलसञ्चतः ।
नीवीवद्गतिसञ्चारः क्रमात् सव्यापसव्ययोः ॥ ५
रेखासौष्ठवसंपन्नः स शुद्धो नेरिरुच्यते ।
उरुपेष्वपि सर्वेषु विना दृष्टकपृष्ठकम् ॥ ६
ब्राह्यभ्रमरिकां बद्ध्वा मुक्तिः स्याच्चतुरस्रके ।
छत्रभ्रमरिका किन्तु भवेत् करणनेरितः ॥ ७

इति नेरिः ॥

झंपातालः सगोपुच्छो[1] हस्तकोप्पलपल्लवः ।
पार्श्वोर्ध्वजानुनी दण्डपक्षं तलविलासितम् ॥ १
विद्युद्भ्रान्तं ततश्चन्द्रवर्त्तनामनि शुंभितम् ।
ललाटतिलकं पश्चात् लतावृश्चिकसंज्ञकम् ॥ २
नवभिः करणैरेभिः क्रमात् सव्यापसव्यतः ।
कृत्वालीढे स्थितिर्यत्र नेरिः करणपूर्वकः ॥ ३

इति करणनेरिः ॥

यत्रानेकस्थितिः क्रीडा गोपुच्छाद्यं ततः समा ।
सबालमकरा लास्यश्चारी नूपुरपादिका ।
त्रिसञ्चं [2]सौष्ठवं रेखा प्रत्याशं भिन्नमुच्युते ॥ १

इति भिन्नम् ॥

तिर्यङ्मुखा प्रधानेन मध्ये काचिद् यथोचिता ।
गतिः सबालककरस्त्रिपताकः ससौष्ठवम्[3] ॥ १
त्रिसञ्चेन पिपील्या च मल्लिकामोदतालतः ।
शोभितं यत्र दिग्भावैश्चित्रं तत्स्थितिरीप्सिता ॥ २

इति चित्रम् ॥

मरालगतिका यत्र मध्ये गत्यान्ययान्विता ।
समतालप्रयोगेण यतिभेदेन राजितम् ॥ १

---

1 Ms पुछो. 2 Ms सौष्ठुवं. 3 Ms °ष्ठु.

विचित्रभ्रमरो बालक्रीडासाधनचक्रवत् ।
स्थितिर्यथेप्सिता तद्विभ्रजकं नत्रमुच्यते ॥ २

इति नत्रम् ॥

करिहस्तागतिर्यत्र काचिन्मध्ये यथेप्सिता ।
रचाताल: सुयतिवान् [1]मध्यमानेनावस्थितिः ॥ १
विचित्रचतुरौ हस्तौ दिक्षु सज्जनमोहनम् ।
अदृष्टपृष्ठपूर्वं तत् तुल्लं सद्भिर्निगद्यते ॥ २

इत्यदृष्टपृष्ठतुल्लम् ॥

कांश्चित् तालानुपक्रम्य प्रयोगे बहुलद्रुतान् ।
संकीर्णानेकगतिभिः प्रवृत्तं सुमनोहरम् ।
[2]ध्रुवाडाख्यं च [3]तज्ज्ञेयं तालरूपं विचक्षणैः ॥ १

तद् यथा ।

हस्तबाह्वङ्घ्रिभिः सव्यैर्वामयद्वाहुहस्तकैः ।
षड्भिरङ्गैश्चतुर्भिर्वा तालैस्तत्तन्मितोऽङ्ककैः ॥ १
समानमात्रलान्तैश्च द्रुतलघ्वादिकैर्यदि ।
पूर्वं पूर्वं परित्यज्य त्वग्रिमाग्रिममाश्रितैः ॥ २
एकदा वान्यतालेन नृत्तं कुर्यान्नटाग्रणीः ।
चक्रबन्धं तदाख्यातं नृत्तविद्याविशारदैः ॥ ३

इति चक्रबन्धः ॥

तालानां तुल्यमात्राणां षण्णां[4] दलघुरूपिणाम् ।
समद्विभागलान्तानां प्रत्येकं द्विदलं समम् ॥ १
कृत्वा तत्पूर्वपूर्वार्द्धं षट्सु स्थानेषु योजयेत् ।
चरमं चरमं चार्द्धं तत् तत् पूर्वं ततः क्रमात् ॥ २
प्रयोजिते तदा ताला द्वादश प्रभवन्ति हि ।
चक्रबन्धवदन्यत् तु रविचक्रं भवेदिति ॥ ३

इति रविचक्रम् ॥

चतुर्णामेव तालानां रविचक्रोक्तलक्षणम् ।
चतुःषु हस्तपादेषु पूर्वपूर्वदलं न्यसेत् ॥ १

1 Ms °नेनव°. 2 Ms कुवाडा°. 3 Ms तज्ञेय°. 4 Ms षणा.

तत् तत् पादलं हस्तपादयोर्मेलयेन्मिथः ।
सव्यापसव्ययोस्तत्र वसुतालाः भवन्ति हि ।
पद्मबन्धमिति ख्यातं शेषं स्याद् रविचक्रवत् । २

इति पद्मबन्धम् ॥

चतुर्णां तुल्यमात्राणां तालानां दलरूपिणाम् ।
समत्रिभागलान्तानां प्रत्येकं तु पृथक् पृथक् ॥ १
त्रिविभागान् क्रमात् कृत्वा कराङ्घ्रिष्वथ योजयेत् ।
स्वस्थाने च तृतीये च द्वितीये तालखण्डकान् ॥ २
प्रतितालं क्रमान्न्यस्य नटो नृत्तं समाचरेत् ।
नागबन्धं तदा [1]प्रोक्तमन्यत् स्यात् पद्मबन्धवत् ॥ ३

इति नागबन्धम् ।

चतुर्णामेव तालानां पद्मबन्धोक्तलक्षणम्[2] ।
स्थापयेत् पूर्वपूर्वार्धं परार्धं चान्योन्यमिथः ॥ १
हस्तयोः पादयोस्तद्वद्धस्ताङ्घ्र्योरुभयोस्तथा ।
सव्यापसव्ययोर्हस्तपादयोः स्वाग्रतः क्रमात् ।
अन्यतालकृतं नृत्तं वृक्षबन्धं तदोदितम् ॥ २

इति वृक्षबन्धतालरूपकम् ॥

हंसपक्षकरो यत्र हंसलीलः कुलीरिका ।
अन्या तदङ्गिनी काचित् प्रतिदिक्षु प्रसारणम् ॥ १
वानरक्रीडिताकारं तलसञ्चेन सीलुकम् ।
तदेव जारमानाख्यं निगदन्त्यपरे जनाः ॥ २

इति सीलुकम् ॥

अश्लिष्टाख्या गतिर्यत्र काचिदन्तर्मनोहरा ।
सक्षिप्रगजलीलश्च वर्त्तना पद्मकोशयोः ।
प्रतिदिक्स्थानकं तुल्लं तत् क्रमं जलकीटवत् । १

इति तुल्लम् ॥

विलम्बितैकताली च हस्तावाविद्धवक्रकौ ।
पार्ष्णिरेचितिका चारी काचिन्मध्ये यथेप्सिता ।
यत्र तत् प्रसरं प्रोक्तं स्थित्यादिकमनोहरम् ॥ १

इति प्रसरम् ॥

1. Ms प्रोक्तं. 2 Ms लक्षणाम्.

ऊरुवेणीगतिर्यत्र मध्येऽप्यन्या तदीप्सिता।
उरोवर्त्तितकौ हस्तौ सुलयो लघुशेखरः।
स्थितिदिग्भेदतो विद्युद्भ्रतिवत् कर्तरी मता॥ १

इति कर्तरी॥

पश्चात्क्षिप्तावुरःक्षेत्राद् यत्र स्यातां लताकरौ।
स्तम्भक्रीडनिका चारी मध्ये काचिद् यथोचिता॥
यतिलग्नः समुत्पाद्यः प्रत्याशं गतिचित्रितम्।
पलाशिगृध्रक्रीडा[1]यास्तद्धोल्लुमिति कीर्तितम्॥ २

इति होल्लु। इति द्वादश उरुपाणि॥

आद्यन्ते भ्रमरी यत्र सुलूनां त्रितयं हृदि।
भुजंगत्रासितामोक्षे तद्‌धुवाडः समीरितम्। १
अन्ते सर्वधुवाडानामन्तर्भ्रमरिका मता।
कलविंकविनोदाख्यं [2]तार्क्ष्यं यक्षविलासितम्॥ २
विद्युद्विलासितं वात्यावर्त्तितं रविसञ्चरम्।
नर्त्तनाभरणं तिर्यक्[3]ताण्डवं रङ्गभूषणम्॥ ३
वादीशगजभेरूडं रोलंबांगविलासितम्।
पक्षिशार्दूलकं सिंहप्लुतकं द्वादशेति च।
इत्यूद्‌र्ध्वाधःकृतं पूर्वं वक्ष्ये तल्लक्षणं क्रमात्॥ ४

[ लक्षणानि ]

चक्रभ्रमरिनिःशङ्कौ डांडुहोरमयी क्रमात्।
यदोत्प्लुत्योक्तमोक्षश्चेत् कलविंकविनोदकम्॥ १
चक्रभ्रमरिका यत्र होर्मयीडांडुकौ मतौ।
निःशङ्क उक्तन्यासः [4]स्यात् तार्क्ष्यपक्षविलासिते॥ २
चक्रभ्रमरिकाडांडू निःशङ्को होर्मयी ततः।
यदा प्रागुक्तमोक्षः स्यात् तदा विद्युद्विला
चक्रभ्रमरिहोर्मय्यौ ततो निःशङ्कडांडुकौ।
उक्तमुक्तिः क्रमाद् यत्र वात्यावर्तितकं च तत्॥ ४

1 Ms °डा तद्धो° 2 Ms तार्क्ष्य. 3 Ms °का. 4 Ms स्यः स्ता°

बाह्यभ्रमरिका पश्चाद् डांडुको होमेंयी ततः।
निःशङ्कश्चोक्तमोक्षोऽपि यत्र स्याद् रविसञ्चरः॥ ५
बाह्यभ्रमरिनिःशङ्कौ होमेंयीडाण्डुकौ ततः।
पूर्वोक्तमोक्षणं यत्र नर्त्तनाभरणं च तत्॥ ६
बाह्यभ्रमरिका यत्र त्वडालुर्होमेंयी ततः।
रायरङ्गालुरुक्तांत्यस्तत् तिर्यक् ताण्डवे भवेत्॥ ७
बाह्यभ्रमरिकांरायरंगालुर्होमेंयी ततः।
अडालुरुक्तमोक्षश्च यत्र तद्रङ्गभूषणम्॥ ८
तिरपादिभ्रमर्यत्र डांडुश्चाडंतरस्ततः।
वादीशगजभेरुडे होमेंयी चोक्तमोक्षकः॥ ९
तिरपाद्या भ्रमर्यत्र क्रमाद्धोमेंयिडांडुकौ[1]।
रायरंगालुरुक्तान्त्यो रोलंबांगविलासिते॥ १०
तिरपभ्रमरी चादौ त्वडालुर्डाण्डुकौ ततः।
निःशङ्क उक्तमोक्षोऽपि पक्षिशार्दूलकं हि तत्॥ ११
तिरपभ्रमरी यत्र रायरंगालुडाण्डुकौ।
होमेंयी चोक्तमुक्तिः स्यात् तदा सिंहप्लुतं हि तत्॥ १२

इति द्वादश धुवाडानि॥

इत्युक्ता लागवोऽन्येऽपि सुलूपूर्वं पृथक् पृथक्।
एकावृत्त्या द्विरावृत्त्या क्वचिदन्येन वा सह।
उत्प्लवन्ति नटा यत्र ते सर्वे बिड्डुलागवः॥ १
अडालू रायरंगालुर्निःशंको होमेंयी तथा।
डांडु श्चाडंतरोदिङ्गू रायादिः पक्षिसालुवः॥ २
अलगंढे किकावीसुस्तथामुंगरणं ततः।
कर्त्तर्यलागपूर्वौ द्वौ दिंडिकौ वाथ लक्षणम्॥ ३
सुलूं बद्ध्वा यदोत्प्लुत्य चरणौ पक्षिपक्षवत्।
भ्रामयित्वा पतेद् भूमौ तदा डालुरितीरितः॥ ४
सुलूं बद्ध्वैकपादेन सहैवानुपतेद् दिवि।
द्वितीयोऽपि तदा रायरंगालुं तद्विदो विदुः॥ ५

1 Ms °डादुकौ.

सुल्पपूर्वं यदोत्प्लुत्य मिलितौ चरणौ समौ ।
दूरं भूमौ निपततः स निःशंकः प्रकीर्त्तितः ॥ ६

यत्र स्वस्तिकमावर्त्य पादः पृष्ठगतो यदा ।
लङ्घयेदङ्घ्रिणान्येन प्रोक्ता सा होर्मयी तदा ॥ ७

पुरः प्रसार्य चरणं लङ्घयेदपराङ्घ्रिणा ।
सुल्पपूर्वं तदा सद्भि[1]र्डौंदुरित्यभिधीयते ॥ ८

पुरतोऽपिहितौ[2] पादौ डांदुरेवाप्यनन्तरः ।
उत्प्लुत्य चरणद्वन्द्वं वस्त्रनिःपीडनोपमम् ॥ ९

परिभ्राम्यावनीं याति तदिदं दिंडुमुच्यते ॥
व्योम्नि निःशंकदिंडुभ्यां रायादिः पक्षिसालुवः ॥ १०

अधोमुखः [3]समुत्पत्य निपत्य पुरतो यदि ।
कुक्कुटासनमाबध्य स्थिरश्चेदलगं तदा ॥ ११

समौ पादौ यदान्यस्मि[4]न्पार्श्वे त्वपरपार्श्वतः ।
उत्प्लुत्य पातयेच्चित्रं तदा ढंकीति कथ्यते ॥ १२

भूमावेकं समास्थाय द्वितीयं पूर्ववद् यदा ।
पातयेच्चरणौ व्योम्नि तं वीसं मुनिरब्रवीत् ॥ १३

संहतात्पुरमुत्प्लुत्य तनुवृत्त्या पराङ्मुखः ।
महीतले यदासीनो मुंगरणं कुक्कुटासने ॥ १४

तमेव विपरीतेन हिंगरणं केचिदूचिरे ।
होर्मयीकर्त्तरीपूर्वं कार्तरी डिंदुमूचिरे ॥ १५

गगने लगदिंडुभ्यामुच्यते लगदिंडुकः ॥ १६

इत्यादि बहवो भेदा सन्ति ते बिडुलागवः ।
लोकवृत्त्यानुसारेण ज्ञातव्यास्ते यथोचिताः ॥ १७

इति बिडुलागवः ।

बाह्यान्तस्तिरपच्छत्रचक्राद्या भ्रमरिका यथा ।
दक्षिणेणाङ्घ्रिणा स्थित्वा वाममङ्घ्रिं च कुञ्चयेत् ।
वामावर्त्तं भ्रमेद् यत्र सा बाह्या भ्रमरी मता ॥ १

1 Ms दाडु°. 2 Ms °पिलितौ. 3 Ms °प्लुत्य. 4 Ms °पार्श्वे.

एतस्यास्तु विपर्यासादन्तर्भ्रमरिका भवेत् ।
तिरपभ्रमरी तिर्यक् द्वावङ्घ्री स्वस्तिकात् परम् ॥ २
त्रिविक्रमाकारधारि स्थानमास्थाय यत्र तु ।
वामावर्त्तं भ्रमेदाहुस्तां छत्रभ्रमरीं बुधाः ॥ ३
चक्रभ्रमरिकाखण्डसूच्यर्द्धं चक्रवत्क्रमात् ।
अन्याश्च काश्चिद् विज्ञेया भ्रमर्यो लोकवृत्तितः ॥ ४

इति भ्रमर्यः ।

तालधारिण्यभिव्यक्त तादिकं वर्णसञ्चयम् ।
समुच्चरति षड्गादिमगणादिगणान्वितम् ॥ १
चतुरस्रं समाधाय विधाय शिखरं करम् ।
नाभावेकमुरोदेशादपरं पुरतः परम् ॥ २
पताकहस्तकाद्यन्यतमं कुर्यात् प्रयत्नतः ।
आद्यशब्दाक्षरोत्पत्तिहेतुकं सुभगं ततः ॥ ३
एकपादं पुरासूचीपरं चरणमञ्चितम् ।
पश्चाद्धृत्याथ तं हस्तं तत्तत्करसमं यदा ॥ ४
व्यावर्त्तयेत् तमेवाङ्घ्रिं नयेत् पश्चात् तथापरम् ।
गात्रमात्रस्वरानङ्गैर्भावलोचनचेष्टितैः ॥ ५
पादाभ्यां दर्शयेत् तालं लयाच्छब्दाक्षराण्यलम् ।
नृत्येत् तदा शब्दनृत्तं नृत्तवद्भिरुदीरितम् ॥ ६

इति शब्दनृत्तम् ॥

यस्य गीतस्य यो रागस्तस्य यः स्याद् ग्रहस्वरः ।
षड्गादन्यतमः सोऽत्राभिनेयो हस्तकेन तु ॥ १
दक्षिणेनालपद्मेन वामेन चतुरेण च ।
परिमण्डलितेनाथ मयूरललितेन च ।
एवं विनिर्दिशेत् षड्गं लक्ष्यलक्षणकोविदैः ॥ २
हंसास्याभिधहस्तेन दक्षिणेनेतरेण तु ।
कटिस्थेनार्द्धचन्द्रेण समेन शिरसा तथा ।
ब्रह्माख्यस्थानकेनापि धीमान् रिषभमादिशेत् ॥ ३

शुकतुण्डेन हस्तेन दृष्ट्या करुणया तथा ।
अधोमुखेन शिरसा [1]त्वश्वक्रान्ताभिधेन च ।
चार्याप्युचितया धीमान् गान्धारं स्वरमादिशेत् ॥ ४
[2]पताकौ स्वस्तिकौ कृत्वा शिरसा विधुतेन च ।
शैवाख्यस्थानकेनापि कटीच्छिन्नेन चापुनः ।
दृष्ट्या च हास्यया धीरोऽभिनेयो मध्यमस्वरः ॥ ५
कृत्वालपल्लवौ हस्तौ धुतेन शिरसा तथा ।
एवं विनिर्दिशेद्धीमान् स्वरं पञ्चमसंज्ञकम् ॥ ६
काङ्गूलहस्तकौ कृत्वा दृष्ट्या बीभत्सया तथा ।
परावृत्तेन मूर्ध्ना च प्रत्यालीढाभिधेन च ।
स्थानकेन विनिर्दिष्टो धैवतो निपुणैर्नटैः ॥ ७
[ . . . . . ] हस्तेन करिहस्तेन लीलया
दृष्ट्या विधूतशिरसा निषादं संनिरूपयेत् ॥ ८

इति स्वराभिनयः ॥

इहोदितस्य दिक्स्थानकरणैश्च निरूपितैः ।
समस्तैरथवा व्यस्तैस्तत्तत्कारानुरोधतः ॥ १
यत्र तालयुजा यत्या तन्नृत्यं सुमनोहरम् ।
ततः शब्देन तदनुद्ग्रहेण च ततः पुनः ॥ २
शब्देन तेनकेशब्दखण्डेन ध्रुवकेन च ।
पुनः शब्देन तदनु यतिगीतेन नर्त्तनम् ॥ ३
हावभावादिसुलयतालादिगतिसङ्गतम् ।
यदोल्लासलसद्गात्रं पात्रमारचयेत् तदा ।
स्वरमञ्चकनृत्यं स्याल्लक्ष्यवेदिमनोहरम् ॥ ४

इति स्वरमञ्चनृत्यम् ॥

गीततानग्रहसमं समुचरति तादिकम् ।
पूर्ववद्वर्णसंघातं तालधारिणि हारिणि ॥ १
येन येनेह गीतेन नृत्येत् पात्रं ससौष्ठवम्[3] ।
तत्तन्नृत्यं बुधैर्देश्यं तत्तन्नामपुरःसरम् ॥ २

1 Ms °न्ध. 2 Ms पाताकौ. 3 Ms °ष्ठु°

स्थाप्यादिवर्णानङ्गेन भावान् नेत्रादिरागतः।
हस्तैरभिनयेदर्थान्[1] [2]तत्तद्वाक्यसमुद्भवान्॥ ३

तालग्रहानङ्घ्रिपदैः समादिश्य यथोचितम्।
अनेनैव प्रकारेण गीतनृत्तं समाचरेत्॥ ४

एलादयः शुद्धसूडावर्णाद्यालिक्रमास्तथा।
श्रीरङ्गाद्या विप्रकीर्णास्तथा सालगसूडकाः॥ ५

तथान्येऽपि प्रसिद्धाश्च[3] त्वप्रसिद्धा यथोचिताः।
सार्थाङ्गं नृत्यवन्नृत्येन्निरर्थाङ्गं तु नृत्तवत्॥ ६

इति गीतनृत्यम्॥

देशी द्राविडदेशस्य चिंदुरित्यभिधीयते।
तत्षोढा दृश्यते शुद्धचिन्दुश्च बिन्दुचिन्दुकः॥ १
तिरुवणी चिन्दुको माला चिन्दुकः कोलचारिकः।
गीतमुद्रादिकश्चिन्दुरिति तल्लक्षणं यथा॥ २
यत्रोद्ग्राहध्रुवपदो बद्धो द्राविडभाषया।
तच्छुद्धचिन्दुकः प्रोक्तो मेलापाभोगवर्ज्जितः॥ ३

इति शुद्धचिन्दुः॥

यत्रोद्ग्राहं च मेलापं सकृद् गीत्वा ततो ध्रुवम्।
प्रभुनामाङ्कितं द्वित्रिविरामाढ्यं मुहुर्मुहुः।
गीत्वा ध्रुवेषु मोक्षः स्याच्चेत् तदा बिन्दुचिन्दुकः। १

इति बिन्दुचिन्दुः॥

नेतृनामाङ्कितोद्ग्राहस्तन्मानात् सार्धकध्रुवः।
एतद् द्वयं मुहुर्गायेत् तदा तिरुवणिं विदुः॥ १

इति तिरुवणिचिन्दुः॥

अनियतपादभागे माला मालादिचिन्दुकः॥ १

इति मालाचिन्दुः॥

यत्र पाटाक्षरालापस्ततो वाक्यमतात्मकम्।
पदरागसमुद्दीप्तं तत्कथाबीजसूचकम्॥ १

---

1 Ms °नयेन°. 2 Ms यद्वा°. 3 Ms श्चा.

ततश्च चिन्दवः पञ्च सप्त वा मध्यमध्यतः ।
पिल्मिरुकैमिरूरम्यकलासैरिति चित्रितम् ॥ २
शास्त्रसङ्गकथावृत्तिश्चेत् तदा कोलचारिका ।
अन्यत्कथाप्रवृत्तिश्चेत् तदा कट्टेण चिन्दुकः ॥ ३

इति कोलचारीचिन्दुः ॥

गीतवद्गीतमुद्रादिचिन्दुकोऽष्टविधः स्मृतः ।
मेलापकान्तराभोगसमस्तव्यस्तहीनतः ।
द्वित्रिश्चतुःपञ्चधा तु चिन्दवः परिकीर्तिताः ॥ १
यदि प्रयोगो मेलापे कश्चित् प्रयोगको ध्रुवे ।
तदोद्ग्राहे च मुक्तिः स्याद् यदि प्रयोगकोऽन्तरे ।
तदा तु ध्रुवके मोक्ष एवं न्यासस्तु सर्वदा ॥ २

इति गीतमुद्राचिन्दुः ॥

स्यन्द्यपस्यन्दिताध्यर्धस्थितावर्त्तादिमुख्यतः ।
वैशाखमण्डलालीढप्रत्यालीढादिभिस्तथा ॥ १
रेखा[1]सौष्ठवलास्याङ्गैः शिरोऽङ्घ्रिकररेचकैः ।
भावहावविलासैश्च सुलूचित्रकलासतः ॥ २
चारुपाटानुगं चंचत्किङ्किणीध्वनिपेशलम् ।
तत्तज्जातियुतं वेषभाषासाहित्यशोभितम् ।
संप्रदायानुसरणं चिन्दुनृत्यं समाचरेत् ॥ ३
यत्र किङ्किणिकावाद्यैराहतिर्घर्घरो [2]मतः ।
पिडिवाटः शिरिपिडी पटवो लगपाटकः ।
शिरितिरः खलुखलुश्चेति घर्घरः षड्विधो मतः ॥ ४
दिशानयापरेऽप्यूह्या घर्घराः शोभयान्विताः ।
सर्वे घर्घरभेदास्ते कार्यास्तालानुगामिनः ॥ ५

इति चिन्दुनृत्यम् ॥

तैलङ्गभाषया बद्धा तूद्ग्राहाभोगवर्जिता ।
सा धरू कथिता धीरैः सा द्विधा परिकीर्त्तिता ॥ १
मुख्या तु कद्दडिधरू तथा मुक्तधरू परा ।
कद्दडिर्बन्धपर्यायस्त्वादौ तत्क्रममुच्यते ॥ २

1 Ms सौष्ठुव. 2 Ms °र्थघरो.

अर्द्धिके[42] वाद्यमानेऽपि यत्र पात्रं धृताञ्चलम् ।
रङ्गं प्रविश्य तत्रादावालापेन तु नर्त्तनम् ॥ १

तत्तत्करादिभिः पाटैर्लयतालसमन्वितम् ।
धात्वादिरहितं गीतमालापः परिकीर्तितम् ॥ २

ततः स्यात् ससुलूतुङ्गलास्याङ्गैश्च समन्वितम् ।
विचित्रचरणं साक्षाद्रागमूर्त्तिरिवाङ्गकैः ॥ ३

दर्शयन् पिल्मुरुकैमुर्वादिभिर्मध्यमध्यतः ।
त्रिचतुःपञ्चषट्सप्तधरूभिः सह पट्टिभिः ।
भावहावसुलास्याङ्गनर्त्तनं तनुयान् नटी ॥ ४

विलम्बितोच्चारमानं यदेकयतिसुन्दरम् ।
अतालं पदमेकं चेद् बद्धः कर्णाटभाषया ।
सा पट्टिः कथिता [43]तज्ज्ञै रसिकानन्ददायिनी ॥ ५

ततः कलासतो रम्यैर्द्रुतमानस्वरैः पुनः ।
कैमुरुशब्दतः पश्चाच्चित्रं नर्तनमाचरेत् ॥ ६

तालं तन्त्रीमृदङ्गानां समन्तान्मेलनं यदा ।
नर्माङ्गं नर्त्तनं यत्र सुलुपं तन्निगद्यते ॥ ७

तालतुल्यसुलूतुङ्गघर्घरध्वनिपेशलम् ।
पुनः कलासशब्देन द्विरावृत्तिपदेन च ॥ ८

विधाय नर्तनं त्वर्द्धिनाम्नि न्यासं समाचरेत् ।
तदा कट्टडि नृत्यं स्याद् देशी तैलङ्गदेशजा ॥ ९

नमनोन्नमनं तुङ्गमूर्ध्वाधः सौष्ठवस्य च ।
चतुर्विरामकैर्बद्धैः पदैरुद्ग्राहनिर्मितम् ॥ १०

तालेन येन केनापि युतं तत्पदसंज्ञकम् ।
एतदुक्ते विपर्यासाद्वा धरूकट्टडिर्मता ॥ ११

इति कट्टडिधरू ।

धरूपूर्वार्धके यत्र पिल्मिरूं संप्रयुज्य च ।
पुनः पूर्वार्धकं पश्चाच्चरमं नृत्यमाचरेत् ॥ १

42 Ms. अर्धिकतो 43 Ms. ताधै°

तालस्य लयभेदेन कतिवारं तु नर्तयेत् ।
अथवान्यधरूपूर्वपूर्वाः ड्डंनतरा परा ।
तालद्रुतलयोऽप्यत्र सा प्रोक्ता मुक्तिकाधरू ॥ २

इति मुक्तिकाधरू । धरूनृत्यम् ।

गीर्वाणमध्यदेशीयभाषासाहित्यराजितम् ।
त्रिचतुर्वाक्यसंपन्नं नरनारीकथाश्रयम्[44] ॥ १
शृङ्गाररसभावाढ्यं रागतालपदात्मकम् ।
पादान्तानुप्रासयुतं पादान्तयमकं तथा ॥ २
प्रतिपादं यत्र बद्धमेवं पादचतुष्टयम् ।
उद्ग्राहध्रुवकाभोगान्तरध्रुवपदं स्मृतम् ॥ ३
गीयमाने ध्रुवपदे हावभावमनोहरे ।
नर्त्तनं तनुयात् पात्रं कान्तादृष्ट्यादिसन्मुखम् ॥ ४
नानागतिलसद्भावं लसल्लास्याङ्गसुन्दरम् ।
पदान्तरान्तरागा यद् दन्तोद्योतितरङ्गकम् ॥ ५
खण्डमानेन रचितं मध्ये मध्ये च कम्पनम् ।
सर्वाभिनयसंपन्नं रेखालावण्यशोभितम् ॥ ६
तदा ध्रुवपदं नृत्यं मुखरागविभूषितम् ।
स्यादक्षिभ्रूविकारादिशृङ्गाराकृतिसूचकः ।
सग्रीवरेचको हावो भावश्चित्तसमुद्भवः ॥ ७

इति ध्रुवपदम् ॥ इति निबन्धनृत्यम् ॥

अथानिबन्धनृत्यस्य क्रमं वक्ष्यामि लोकतः ।
नामावली यतिर्नेरिर्नेरिः सालङ्गपूर्वकः ॥ १
सङ्कीर्णनेरिर्भार्यादिर्नेरिश्च नडनेरिकः ।
कैवर्तनं मुरुरट्टे मुरू च तालरूपकम् ।
गुण्डालं कमलं मण्डी मुड्डपं च पुरण्डरी ॥ २
कुड्डपं तिर्यकरणं लावणी चटुकं ततः ।
नानादेशोद्भवा देशी तत्तद्दिक्शास्त्रता इति ॥ ३

[ लक्षणानि ]

यथाभिनयसंपन्नं विचित्रगतिसुन्दरम् ।

44 Ms. °कृथा

तीवटिग्रहभेदेन लयतालसमन्वितम् ।
नामावली नृत्तमिदं नृत्येज्जनमनोहरम् ॥ १

इति नामावली ॥

विरामसाम्यगतिभिर्लागैर्नानामनोहरैः ।
लयतालविचित्राङ्गैर्यतिनृत्तं समाचरेत् ॥ १

इति यतिः ॥

आदितालानुगं यत्र विलम्बितलयान्वितम् ।
विचित्रगतिसंपन्नं सामान्या नेरिरिष्यते ॥ १

[ इति नेरिः ]

सा एवायुतसंयुक्तहस्तैः सालङ्गनेरिका ॥ १

[ इति सालङ्गनेरिः ]

युक्तायुक्तैर्नृत्तहस्तैः सङ्कीर्णा नेरिरुच्यते ॥ १

[ इति संकीर्णनेरिः ]

रसभावाङ्गदृष्टयाद्यैर्भावनेरिः प्रकथ्यते ॥ १

[ इति भावनेरिः ]

स एव द्रुतमानेन नडनेरिरिति स्मृता ॥ १

[ इति नडनेरि ]

मणिबन्धयुतौ हस्तौ भ्रामयेत् सविलासकम् ।
सव्यापसव्ययोर्यत्र तद्योग्यगतिसुन्दरम् ।
विदध्यान्नर्त्तनं सम्यक् तदा कैवर्त्तनाभिधम् ॥ १

[ इति कैवर्तनम् ]

यत्राङ्गं मोटयेत् तिर्यग् विक्षिप्ताक्षिप्तकौ मुहुः ।
त्रिपताकौ पुरा पात्रं सा मुरू कथ्यते बुधैः ॥ १

[ इति मुरू ]

उत्कटस्थो नटो गात्रं मोटयेद् द्रुतमानतः ।
वपुः पुनः पुनर्यत्र मुरूकं रट्टपूर्वकम् ॥ १

[ इति रट्टमुरू ]

किञ्चित्तालमुपक्रम्य प्रयोगे बहुलद्रुतम् ।
संकीर्णानेकगतिभिः प्रवृत्तं तालरूपकम् ॥ १

[ इति तालरूपकम् ]

जङ्घाया बाह्यमन्तर्यद्विदधद्भ्रमणं द्रुतम् ।
तालानुगति नृत्तं चेद् गुण्डालं कथितं तदा ॥ १

[ इति गुण्डालम् ]

बहुभिर्बाहुभेदैश्च सालपल्लववर्त्तनैः ।
कटीपार्श्वशिरोरेख[45]पूर्वकं कमलं तदा ॥ १

[ इति कमलम् ]

पृष्ठाग्रसारिताभ्यां चेत् पादाभ्यां नतजानुकम् ॥ १

[ इति नतजानुकम् ]

पर्यायान्नर्तनं कुर्यात् तदा मण्डीति कीर्तिता ॥ १

[ इति मण्डी ]

यदा मुडुपचारीभि[46]र्नृत्येत् तालानुरोधतः ।
तदा मुडुपमित्युक्तं विचित्रगतिरञ्जितम् ॥ १

[ इति मुडुपम् ]

मुडुपस्थो नटो यत्र विधाय भ्रमरीं पुनः ।
पुनर्मुडुपमानृत्य नृत्येच्चेत् सा मुरण्डरी ॥ १

[ इति मुरण्डरी ]

कुञ्चिताङ्गुलिना यत्र प्रसृताङ्गुष्ठकेन चेत् ।
प्रसार्य जङ्घिकां कम्पं विचित्रद्रुतमाचरेत् ॥
घर्घरीभिः समायुक्तं तदेतत् कुडुपं मतम् ॥ १

[ इति कुडुपम् ]

कश्चित्करणमास्थाय विदध्याद्भ्रमरीं यदा ।
अवसाने पुनः कश्चित्करणं समुपाश्रयेत् ।
एवं मुहुर्मुहुर्यत्र करणं तिर्यपूर्वकम् ॥ १

[ इति तिर्यक्करणम् ]

---

45 Ms. रेख 46 Ms. नृत्ये°

समपादे स्थितं पात्रं कटिन्यस्तार्धचन्द्रकम् ।
कटेरुपरि तत्कायं भ्रामयेल्लावणी तदा ॥ १

[ इति लावणी ]

जानुभ्यां भूमिलग्नाभ्यां पद्भ्यां वा मण्डलाकृतिः ।
नम्रपृष्ठं लताहस्तौ पात्रं भ्रमणमाचरेत् ।
तदासौ चट्टुरित्युक्तः सूर्यमण्डलवद्गतिः ॥ १

[ इति चट्टुः ]

इत्यनिबद्धोरूपाणि ॥

यावनीभाषया युक्तं यत्र गीतं धृताञ्चलम् ।
कल्लादिगजराद्युक्तं कृत्याहगेन भूषितम् ॥ १

विदध्यान्नर्तनं नानालयत्रयविचित्रितम् ।
कोमलाङ्गैर्यदा नृत्यं भ्रमर्यादिविराजितम् ॥ २

सशब्दा च क्रिया यत्र ध्रुवशम्यादिभेदतः ।
यत्र चेष्टाविरहितं तन्नृत्तं जक्कडी मतम् ॥ ३

पारसीकैः पण्डितैस्तूद्ग्रहादिस्वरभाषया ।
तद् गीतं जक्कडीसंज्ञं यवनानामतिप्रियम् ॥ ४

[इति] जक्कडी ॥

मुरजादिषु वाद्येषु वाद्यमानेषु वादकैः ।
कुतूहलाय भूपानां वसन्ताद्युत्सवेषु चेत् ॥ १

क्रमाच्चत्वारि पात्राणि यद्वाष्टौ षोडशाथ वा ।
द्वात्रिंशद्वा चतुःषष्टिः सन्धीभूय वियुज्य च ॥ २

प्रनृत्यन्ति समादाय दण्डकौ पाणिपङ्कजैः ।
अङ्गुष्ठसम्मितौ स्थौल्ये दैर्घ्ये च षोडशाङ्गुलैः ॥ ३

स्वर्णादिधातुबद्धान्तौ सरलौ वर्तुलौ दृढौ ।
चित्रितौ वर्णकैर्ग्रन्थिवर्जितौ मसृणौ तथा ॥ ४

तत्तद्देशानुसारेण धृत्वा वा दण्डचामरे ।
दण्डक्षौमाञ्चले यद्वा दण्डकाछुरिकेऽथवा ॥ ५

चतुर्भिः प्रञ्चभिर्घातैर्यद्वा षड्भिः प्रहारकैः ।
सशब्दघातभेदैश्च पुरतः पृष्ठतोऽपि च ॥ ६

पार्श्वयोरुभयोस्तद्वद् घातभेदैस्ततः परम् ।
चारीभिर्भ्रमरीभिश्च चित्रैस्तैर्वामसव्यतः ॥ ७

असकृन्मण्डलीभूय गीततालयानुगम् ।
तदोदितं बुधैर्दण्डरासं जनमनोहरम् ॥ ८

दण्डैर्विना कृतं नृत्यं रासनृत्यं तदेव हि ॥ ९

इति रासनृत्यम् । इत्यनिबन्धनृत्तम् ।



# श्लोकपङ्क्ति-अनुक्रमणिका

[ The first figure indicates the page number and the second figure the line number.]


| | | |
|---|---|---|
| अग्रतः क्षेपणाद् | २ | २५ |
| अङ्गीकृतसुसङ्गीतभृङ्गी | ५ | ९४ |
| अङ्गुष्ठमध्यमाङ्गुल्यौ | ३ | ४६ |
| अङ्गुष्टसम्मितौ स्थौल्ये | २१ | ५५१ |
| अडालुरुक्तमोक्षश्च यत्र | ११ | २५९ |
| अडालु रायरंगालुर्निःशंकौ | ११ | २७२ |
| अथवाऽहिफणाकारां | ३ | ४० |
| अथवान्यधरूपूर्वपूर्वाः | १८ | ४४७ |
| अथानिबन्धनृत्यस्य | १८ | ४६६ |
| अदृष्टपृष्ठतुल्लं च तोलरूपं | ६ | १३८ |
| अदृष्टपृष्ठपूर्वं तत | ८ | १७४ |
| अधस्तलपताकश्च बाहुस्तत्र | ३ | ५१ |
| अधोमुखेन शिरसा | १४ | ३३६ |
| अधोमुखः समुत्प्लुत्य | १२ | २९० |
| अन्ते सर्वधुवाडानामन्तभ्रमरि | १० | २३७ |
| अन्यत्कथाप्रवृत्तिश्चेत तदा | १६ | ३९३ |
| अन्यतालकृतं नृत्तं | ९ | २११ |
| अन्याश्च काश्चिद् विज्ञेया | १३ | ३१२ |
| अन्या तदङ्गिनी काचित् | ९ | २१४ |
| अनिबन्धं त्वनियमाद् | २ | १५ |
| अनियतपादभागे माला | १५ | ३८६ |
| अनेनैव प्रकारेण गीतनृत्त | १५ | ३६६ |
| अतालं पदमेकं चेद् | १७ | ४२९ |
| अर्दिके वाद्यमानेऽपि यत्र | १७ | ४१९ |
| अलगंढें किकाबीसुस्तथा | ११ | २७४ |
| अवसाने पुनः | २० | ५२६ |
| अश्लिष्टाख्या गतिर्यत्र | ९ | २१८ |
| असकृन्मण्डलीभूयगीतताल | २२ | ५६० |
| आकर्णयन्ती यदि | ६ | ११९ |
| आदितालानुगं यत्र | १९ | ४८१ |
| आद्यन्ते भ्रमरी यत्र | १० | २३५ |
| आद्यशब्दाक्षरोत्पत्तिहेतुकं | १३ | ३१९ |
| आविद्धवक्त्रहस्ताभ्यां चार्या | ३ | ३३ |
| इत्युक्ता लागवेऽन्येऽपि | ११ | २६९ |
| इत्युद्दिष्टं बन्धकस्य | २ | २० |
| इत्युदूर्ध्वाधःकृतं पूर्वं | १० | २४३ |
| इत्यादि बहवो भेदा | १२ | ३०१ |
| इतस्ततोऽर्थपर्याय इङ्गने | २ | ३१ |
| इष्टार्थ क्रियते | २ | २८ |
| इहोदितस्य दिक्स्थान | १४ | ३४९ |
| उत्कटस्थो नटो | १९ | ४९९ |
| उक्तमुक्तिः क्रमाद् यत्र | १० | २५१ |
| उत्प्लवन्ति नटा यत्र | ११ | २७१ |
| उत्प्लुत्य चरणद्वन्द्वं | १२ | २८७ |
| उत्प्लुत्य पातयेच्चित्रं | १२ | २९३ |
| उद्ग्राहध्रुवका भोगान्तर | १८ | ४५५ |
| उद्वेष्टितेन वामेन | ४ | ६५ |
| उरुपेष्वपि सर्वेषु | ७ | १४६ |
| उरोवर्तितकौ हस्तौ | १० | २२७ |
| ऊर्ध्वाधोर्ध्वाङ्गं यथा | ४ | ७० |
| ऊरुवेणी गतिर्यत्र मध्येऽप्य | १० | २२६ |
| एकदा वान्यतालेन | ८ | १८४ |
| एकपादं पुरःसूचीपरं | १३ | ३२० |
| एकावृत्त्या द्विरावृत्त्या | ११ | २७० |
| एतद् द्वयं मुहुर्गायेत् | १५ | ३८४ |
| एतदुक्ते विपर्यासाद्वा | १७ | ४४२ |
| एतस्यास्तु विपर्यासादन्त | १३ | ३०७ |
| एलादयः शुद्धसूडावर्णा | १५ | ३६७ |
| एवं मुहुर्मुहुर्यत्र | २० | ५२७ |
| एवं विनिर्दिशेद्धीमान् | १४ | ३४२ |
| एवं विनिर्दिशेत् | १३ | ३३१ |
| कटिस्थेनार्धचन्द्रेण समेन | १३ | ३३३ |
| कटीपार्श्वशिरोदेशपूर्वकं | २० | ५०९ |
| कटेरुपरि तत्कार्यं | २१ | ५३० |
| कट्टडिर्बन्धपर्यायस्त्वादौ | १६ | ४१८ |
| कश्चित्करणमास्थाय | २० | ५२५ |

| | | |
|---|---|---|
| कमलवर्त्तनिकामादौ | ५ | १०२ |
| कर्त्तर्यलागपूर्वौ द्वौ | ११ | २७५ |
| करिहस्तकया चार्या . | ४ | ६४ |
| करिहस्तागतिर्यत्र काचिन्मध्ये | ८ | १७१ |
| कलविंकविनोदाख्यं | १० | २३८ |
| कलादिगजराद्युक्तं कृत्य | २१ | ५३८ |
| काङ्गूलहस्तकौ कृत्वा | १४ | ३४३ |
| काश्चित् तालानुपक्रम्य | ८ | १७६ |
| किञ्चित्तालमुपक्रम्य प्रयोगे | २० | ५०२ |
| कुक्कुटासनमाबध्य स्थिरः | १२ | २९१ |
| कुडुकस्यां ततश्च | २ | ५ |
| कुडुपं तिर्यकरणं लावणी | १८ | ४७१ |
| कुतूहलाय भूपानां | २१ | ५४७ |
| कुञ्चिताङ्गुलिना यत्र | २० | ५२१ |
| कुर्यात् तदा वामहस्तशिखरो | ६ | १३१ |
| कैमुरुशब्दतः पश्चाच्चित्रं | १७ | ४३२ |
| कोमलाङ्गैर्यदा नृत्य | २१ | ५४० |
| कृत्वा तत्पूर्वपूर्वार्द्धं | ८ | १८९ |
| कृत्वालपल्लवौ हस्तौ | १४ | ३४१ |
| कृत्वालीढे स्थितिर्यत्र | ७ | १५५ |
| कैवर्तनमुरुरट्टे | १८ | ४६९ |
| क्रमाच्चत्वारि पात्राणि | २१ | ५४८ |
| खण्डमानेन रचितं मध्ये | १८ | ४६० |
| गगने लगदिंडुभ्यामुच्यते | १२ | ३०० |
| गणेशं भरतं | २ | ८ |
| गत्यादिनियमैर्युक्तं | २ | १४ |
| गतिं च सर्वदा | ३ | ४९ |
| गतिः पताकहस्तश्च | ७ | १४३ |
| गतिः सबालककरत्रिपताकः | ७ | १६२ |
| गतीनां सानुकूलत्वं | ६ | १२८ |
| गम्भीरश्चाङ्गदृष्टिश्चेद् | ६ | १२७ |
| गात्रं तदनुसारेण | ३ | ४२ |
| गात्रमात्रस्वरानङ्गैर्भावलोचन | १३ | ३२३ |
| गीत्वा ध्रुवेषु मोक्षः | १५ | ३८१ |
| गीतमुद्रादिकश्चिन्दुरिति | १५ | ३७५ |
| गीततानग्रहसमं समुच्चरति | १४ | ३५९ |
| गीतवद्गीतमुद्रादिचिन्दुको | १६ | ३९५ |
| गीयमाने ध्रुवपदे | १८ | ४५६ |
| गीर्वाणमध्यदेशीयभाषा | १८ | ४५० |
| गुण्डालं कमलं मण्डी | १८ | ४७० |
| घर्घरीभिः समायुक्तं | २० | ५२३ |
| चकिताक्षो कुरङ्गी | ६ | ११८ |
| चक्रबन्धं तदाख्यातं | ८ | १८५ |
| चक्रबन्धवदन्यत् | ८ | १९२ |
| चक्रभ्रमरिकाखण्डसूच्यर्द्धं | १३ | ३११ |
| चक्रभ्रमरिकाडांट्ट निःशङ्को | १० | २४८ |
| चक्रभ्रमरिका यत्र | १० | २४६ |
| चक्रभ्रमरिनिःशङ्कौ डांटु | १० | २४४ |
| चक्रभ्रमरिहोर्मग्यौ ततो | १० | २५० |
| चतुर्णां तुल्यमात्राणां तालानां | ९ | २०० |
| चतुर्णामेव तालानां पद्मबन्धो | ९ | २०७ |
| चतुर्णामेव तालानां रविचक्रो | ८ | १९४ |
| चतुर्थीं दिशमासाद्य | ४ | ७७ |
| चन्द्रत्रिनेत्रवाराष्ट | २ | २३ |
| चतुर्भिः पञ्चभिर्घातैर्यद्वा | २२ | ५५६ |
| चतुर्विरामकैर्बद्धैः पदैरुद्ग्राह | १७ | ४४० |
| चरमं चरमं वार्द्धं | ८ | १९० |
| चतुरस्त्रे स्थितिर्यत्र | ७ | १४१ |
| चतुरस्त्रौ करौ | ३ | ५७ |
| चतुरस्त्रं समाधाय | १३ | ३१६ |
| चतुःषु हस्तपादेषु | ८ | १९५ |
| चार्याप्युचितया धीमान् | १४ | ३३७ |
| चार्या सार्ध्या सव्यसूची | ३ | ५० |
| चारीभिर्भ्रमरीभिश्च | २२ | ५५९ |
| चारुपाटानुगं चंचत् | १६ | ४०६ |
| चित्रकलासकं तत्र मोक्षे | ६ | १३३ |
| चित्रितौ वर्णकैर्ग्रन्थिवर्जितौ | २१ | ५५३ |
| छत्रभ्रमरिका किन्तु | ७ | १४८ |




| | | |
|---|---|---|
| जङ्गाया बाह्यमस्त | २० | ५०३ |
| जनितं करणं तत्र | ४ | ७८ |
| जानुभ्यां भूमिलग्नाभ्यां | २१ | ५३२ |
| ज्येष्ठाश्च ये | २ | ९ |
| झंपातालः सगोपुच्छो | ७ | १५० |
| डांट्टश्चाडंतरोर्दिट्ट | ११ | २७३ |
| तच्छुद्धचिन्दुकः प्रोक्तो | १५ | ३७७ |
| तत्तज्जातियुतं वेषभाषा | १६ | ४०७ |
| तत्तन्नृत्यं बुधैर्दृश्यं | १४ | ३६२ |
| तत्क्रमं नृत्ततत्त्वज्ञः | ४ | ७४ |
| तत्पोढा दृश्यते शुद्धचिन्दुश्च | १५ | ३७३ |
| तत् तत् परदलं | ९ | १९६ |
| तत्तत्करादिभिः पाटैर्लयताल | १७ | ४२१ |
| ततोऽर्धरेचिताभ्यां | ४ | ८३ |
| ततोऽञ्जलिकरं कृत्वा | ४ | ८६ |
| ततोऽग्रे सव्यहस्ताङ्घ्री | ६ | १२९ |
| तत्तद्देशानुसारेण धृत्वा | २२ | ५५४ |
| ततस्तत्रैव शीघ्रेण | ५ | १०१ |
| ततस्तु तलसञ्चेन | ३ | ५६ |
| ततस्तु मध्यसञ्चेन | ३ | ५३ |
| ततस्तलमुखाभ्यां च | ४ | ७१ |
| ततस्तलमुखाभ्यां च | ३ | ५८ |
| ततः कलासतो | १७ | ४३१ |
| ततः कुलीरिका चार्या | ४ | ६२ |
| ततश्च चिन्दवः पञ्च सप्त | १९ | ३९० |
| ततश्चन्द्रे लीनकं | ३ | ३५ |
| ततः परं शब्दचालि | २ | १७ |
| ततः शब्देन तदनुद्ग्रहेण | १४ | ३५२ |
| ततः स्यात् ससुलु | १७ | ४२३ |
| तत्र कार्यं द्विधा | २ | १३ |
| तत्रैव चतुरस्रं | ४ | ८२ |
| तत्रैवाभिनयेन्नान्दी श्लोकं | ५ | ९२ |
| तथान्येऽपि प्रसिद्धाश्च | १५ | ३६९ |
| तद् गीतं जक्कडीसंज्ञं | २१ | ५४४ |
| तदग्रयोरन्तरालं | ३ | ४७ |
| तदा कद्दडिनृत्यं | १७ | ४३८ |
| तदासौ चटुरित्युक्तः | २१ | ५३४ |
| तदा तु ध्रुवके | १६ | ४०० |
| तदा ध्रुवपदं नृत्यं | १८ | ४६२ |
| तदा मुडुपमित्युक्तं | २० | ५१६ |
| तदेव जारमानाख्यं | ९ | २१६ |
| तदोद्ग्राहे च मुक्तिः | १६ | ३९९ |
| तदोदितं बुधैर्दण्डरासं | २२ | ५६१ |
| तन्नृत्तमुरुपं प्रोक्तं | ६ | १३६ |
| तमेव विपरीतेन | १२ | २९८ |
| तलपुष्पपुटं कृत्वा | ५ | ८९ |
| तलमध्योर्ध्वसञ्ज्ञाख्याः क्रमेण | ३ | ४१ |
| तलसञ्चमनुप्राप्य | ३ | ४३ |
| तालग्रहानङ्घ्रिपदैः समादिश्च | १५ | ३६५ |
| तालतुल्यसुलूतुङ्गग्रग्रेरध्वनि | १७ | ४३५ |
| तालट्टनलयोऽप्यत्र सा | १८ | ४४८ |
| तालधारिण्यभिव्यक्तं तादिकं | १३ | ३१४ |
| तालस्य लयभेदेन | १८ | ४४६ |
| तालानां तुल्यमात्राणां | ८ | १८७ |
| तालानुगतिनृत्तं चेद् | २० | ५०६ |
| तालेन येन केनापि | १७ | ४४१ |
| तालं तन्त्रीमृदङ्गानां | १७ | ४३३ |
| तीव्रादिग्रहभेदेन लयताल | १९ | ४७५ |
| तिर्यङ्मुखा प्रधानेन | ७ | १६१ |
| तिरपभ्रमरी तिर्यक् | १३ | ३०८ |
| तिरपभ्रमरी यत्र | ११ | २६६ |
| तिरपादिभ्रमर्यत्र | ११ | २६० |
| तिरपाद्या भ्रमर्यत्र | ११ | २६२ |
| तिरुवणी चिन्दुको | १५ | ३७४ |
| तुलं च प्रसरं | ६ | १३९ |
| तैलङ्गभाषया बद्धा | १६ | ४१५ |
| त्रिचतुःपञ्चषट् | १७ | ४२६ |
| त्रिचतुर्वाक्यसंपन्नं | १८ | ४५१ |
| त्रिपताकौ करौ | ६ | १२४ |
| त्रिपताकौ पुरा पात्रं | १९ | ४५ |
| त्रिविक्रमाकारधारि | १३ | ३०९ |
| त्रिविभागान् क्रमात् | ९ | २०२ |

त्रिसञ्च सौष्ठवं ७ १५९
त्रिसञ्चेन पिपील्या ७ १६३
तृतीयां दिशमासाद्य ४ ५९
दण्डक्षोमाञ्चले यद्वा २२ ५५५
दण्डैर्विना कृतं नृत्यं २२ ५६२
दर्शयन् पिल्मुरूकैमु- १७ ४२५
दर्शयेयुः क्रमात् ५ १०५
दक्षिणश्चरणस्तस्मान्निष्क्रम्य ३ ५४
दक्षिणेनालपद्मेन वामेन १३ ३२९
दक्षिणेणाङ्घ्रिणा स्थित्वा १२ ३०५
दक्षिणः खटकः ४ ७९
दिशानयापरेऽप्यूह्या घर्घराः १६ ४१२
दूरं भूमौ निपततः १२ २८१
देवं गुरुम ऋषिं ५ ८७
देशी द्राविडदेशस्य १५ ३७२
द्वितीयायां तृतीयायां ४ ७३
द्वितीयोऽपि तदा ११ २७९
द्वित्रिश्चतुःपञ्चधा तु १६ ३९७
द्वादशेति समाख्याता ६ १४०
द्वात्रिंशद्वा चतुःषष्टिः २१ ५४९
दृष्ट्या च हास्यया १४ ३४०
दृष्ट्या विधूतशिरसा १४ ३४७
धनुःकर्ष स्थितावर्त्तचारी ४ ८०
धरूणां ज्ञातयः १७ ४२२
धरूपूर्वार्धके यत्र १७ ४४४
धात्वादिरहितं गीतमालाप १७ ४२२
ध्रुवाडाख्यं च तज्ज्ञेयं ८ १७८
नमनोन्नमनं तुङ्गमुर्ध्वाधः १७ ४३९
नम्रपृष्ठ लताहस्तौ २१ ५३३
नर्तको नर्तकी २ ६
नर्तनं तनुयान पात्रं १८ ४५७
नर्त्तनाभरणं तिर्यक्ताण्डवं १० २४०
नर्माङ्गं नर्त्तनं १७ ४३४
नवभिः करणैरेभिः ७ १५४
नागबन्धं तदा प्रोक्तमन्यत् ९ २०५
नानागतिलसद्भावं लसल्लास्याङ्ग १८ ४५८
नानादेशोद्भवा देशी १८ ४७२
नाभावेकमुरोदेशादपरं पुरतः १३ ३१७
नामावली नृत्तमिदं १९ ४७६
नामावली यतिर्नैरिर्नैरिः १८ ४६७
नीवीवद् गतिसञ्चारः क्रमात् ७ १४४
निःशङ्क उत्कन्यासः १० २४७
निःशङ्क उत्कमोक्षोऽपि ११ २६५
निःशङ्कश्चोक मोक्षोऽपि यत्र ११ २५३
नृत्तमण्डपमध्यात् तु २ १०
नृत्येत् तदा शब्दनृत्तं १३ ३२५
नृत्वा चाविद्धवक्त्राभ्यां ४ ७६
नेतृनामाङ्कितोदग्राहस्तन्मानात् १५ २८३
नेरिः करणनेरिश्च ६ १३७
पताकहस्तकाद्यन्यतमं १३ ३१८
पताकोऽधस्तलश्चान्यः ६ १३२
पताकौ मणिबन्धस्थौ ५ १०६
पताकौ स्वस्तिकौ १४ ३३८
पद्मबन्धमिति ख्यातं ९ १९८
पदरागमुद्दीप्तं तत्कथा १५ ३८९
पदान्तरान्तरागा यद् १८ ४५९
पञ्चमीं दिशमासाद्य ४ ८४
पर्यायान्नर्तनं कुर्यात् २० ५१३
परावृत्तेन मूर्ध्ना १४ ३४४
परिभ्राम्यावनीं याति १२ २८८
परिमण्डलितेनाथ १३ ३३०
पलाशिगृध्रक्रीडाया १० २३३
पश्चात्क्षिप्तावुरःक्षेत्राद् यत्र १० २३०
पश्चाद्धृत्याथ तं हस्तं १३ ३२१
पक्षिशार्दूलकं सिंहप्लुतकं १० २४२
पातयेच्चरणौ व्योम्नि १२ २९५
पादपार्श्वयुगे स्थित्वा ६ ११६
पादस्य निर्गमं २ ३०
पादान्तानुप्रासयुतं १८ ४५३
पादाग्रतश्चरित्वा तु ६ १२५
पादाभ्यां दर्शयेत् १३ ३२६
पारसीकैः पण्डितैस्तद् २१ ५४६

| | | |
|---|---|---|
| पार्श्वद्वन्द्वं सुलुनामा | ३ | ३७ |
| पार्श्वरेचितकं तत्र | ४ | ६७ |
| पार्श्वयोरुभयोस्तद्वद्घातभेदैः | २२५ | ५६ |
| पार्श्वोर्ध्वजानुनी दण्डपक्षे | ७ | १५१ |
| पार्श्वयोरुभयोस्तद्वत्क्रियया | ६ | ११५ |
| पार्श्वयोरुभयोस्तद्वद् | २२ | ५५६ |
| पार्ष्णिरेचितिका चारी | ९ | २२३ |
| पिडिवाटः शिरिपिडी | १६ | ४१० |
| पिल्मिरूकैर्मिरूरम्यकलासैरिति | १६ | ३९१ |
| पुनर्मुडुपमानृत्येच्चेत् | २० | ५१७ |
| पुनः कलासशब्देन | १७ | ४३६ |
| पुनः पूर्वार्धकं | १७ | ४४५ |
| पुनः शब्देन तदनु | १४ | ३५४ |
| पुरतस्त्रिपदीं गच्छेन्नटवर्यो | ३ | ३४ |
| पुरतोऽपिहितौ पादौ | १२ | २८६ |
| पुरः प्रसार्य चरणं | १२ | २८४ |
| पुष्पाञ्जलिं दर्शयित्वा | ५ | ९१ |
| पूर्वं पूर्वं परित्यज्य | ८ | १८३ |
| पूर्ववद्वर्णसंघातं तालधारिणि | १४ | ३६० |
| पूर्वोक्तमोक्षणं यत्र | १३ | २५५ |
| प्रतितालं क्रमान्न्यस्य नटो | ९ | २०४ |
| प्रतिदिक्स्थानकं तुल्यं तत् | ९ | २२० |
| प्रतिपादं यत्र बद्धमेवं | १८ | ४५४ |
| प्रनृत्यन्ति समादाय | २१ | ५४८ |
| प्रभुनामाङ्कितं द्वित्रिविरामाढ्यं | १५ | ३८० |
| प्रयोजिते तदा ताला | ८ | १९१ |
| प्रसार्य जङ्घिकां | २० | ५२० |
| पृष्ठाग्रसारिताभ्यां चेत् | २० | ५०९ |
| पृष्ठे गुरुः | २ | २६ |
| बर्हिबर्हकलाकारौ करौ | ५ | ११० |
| बहुभिर्बाहुभेदैश्च सालपल्लव | २० | ५०६ |
| ब्रह्माख्यस्थानकेनापि धीमान् | १३ | ३३४ |
| बाह्यभ्रमरिका पश्चाद् | ११ | २५२ |
| बाह्यभ्रमरिका यत्र | ११ | २५६ |
| बाह्यभ्रमरिकां बद्ध्वा | ७ | १४७ |
| बाह्यभ्रमरिकारायरंगालुर्होर्मयी | ११ | २५८ |
| बाह्यभ्रमरिनिःशङ्कौ | ११ | २५४ |
| बाह्यान्तस्तिरपच्छत्रयकाद्या | १२ | ३०४ |
| भवतां भूतये | ५ | ९३ |
| भवेद् द्विशिखरत्वं | ३ | ४१ |
| भानोर्गतिरिवालक्ष्ये हस्ताभ्यां | ५ | ११२ |
| भावहावविलासैश्च | १६ | ४०५ |
| भावहावसुलास्याङ्गनर्तनं | १७ | ४२७ |
| भुजंगत्रासितामोक्षे तद् ध्रुवाडः | १० | २३६ |
| भूमावेकं समास्थाय | १२ | २९४ |
| भूमेरूर्ध्वस्थितिः | ३ | ४४ |
| भ्रामयित्वा पतेद् | ११ | २७७ |
| मण्डलभ्रमितौ श्लिष्टौ | ५ | १०७ |
| मण्डलं स्थानकं तत्र | ४ | ६३ |
| मणिबन्धयुतौ हस्तौ | १९ | ४९२ |
| मत्तकुक्कुटवद् यत्र | ६ | १२३ |
| मध्ये च स्थीयते | ६ | ११७ |
| मंडलस्थानकं कृत्वा | ४ | ६८ |
| मन्दानिलचलद्दीपशिखेवाङ्गस्य | ३ | ३८ |
| मन्मथोद्दीपना दृष्टिः | ६ | १२१ |
| मुरजादिषु वाद्येषु | २१ | ५४६ |
| मरालगतिका यत्र मध्ये | ७ | १६६ |
| मरालीं च पुरस्कृत्वा | ६ | १२० |
| महीतले यदासीनो | १२ | २९७ |
| मातृकामुनिनागांश्च | २ | ७ |
| मायूरीं भानवीं | ५ | १०३ |
| मुख्या तु कद्दडिधरु | १६ | ४१७ |
| मुखचालिरिति प्रोक्ता | २ | २२ |
| मुखचालिश्चोरुपाणि ध्रुवाडा | २ | १६ |
| मुखं तु पूर्वरङ्गः | २ | २१ |
| मुडुपस्थो नटो यत्र | २० | ५१६ |
| मेलापकान्तराभोगसमस्त | १६ | ३९६ |
| मेलापकं वादयेयुः | २ | ४ |
| यतितालयस्थानचारीहस्तात्मकं | ६ | १३५ |
| यतिलग्नः समुत्पाद्यः | १० | २३२ |
| यतः पादस्ततो | २ | २९ |
| यत्र किङ्किणिकावाद्यैराहति | १६ | ४०९ |
| यत्र चेष्टाविरहितं | २१ | ५४२ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| यत्र तत् प्रसरं प्रोक्तं | ९ २२४ | लोकवृत्यानुसारेण ज्ञातव्यास्ते | १२ ३०२ |
| यत्र तालयुजा | १४ ३५१ | वपुः पुनः पुनर्यत्र | १९ ५०० |
| यत्र पाटक्षरालापस्ततो | १५ ३८८ | वादीशगजभैरूडे होर्मयी | ११ २६१ |
| यत्र स्वस्तिकमावर्त्य | १२ २८२ | वादीशगजभैरूडं | १० २४१ |
| यत्राङ्ग मोटयेत् तिर्यग् | १९ ४९६ | वाद्यानां नादसाम्यं | २ ३ |
| यत्रानेकस्थितिः क्रीडा | ७ १५७ | वानरक्रीडिताकारं तलसञ्चेन | ९ २१५ |
| यत्रोद्ग्राहध्रुवपदो बद्धो | १५ ३७७ | वामावर्तं भ्रमेद् | १२ ३०६ |
| यत्रोद्ग्राहं च मेलापं सकृद् | १५ ३७९ | वामावर्त्तं भ्रमेदाहुस्तां | १३ ३१० |
| यथाक्रमेण सप्तभ्यामष्टभ्यां | ४ ७५ | वामो यथास्थितः | ४ ६९ |
| यथाभिनयसंपन्नं विचित्र | १८ ४७४ | विचित्रगतिसंपन्नं | १९ ४८२ |
| यदा तु मकरो | ५ १०८ | विचित्रचरणं साक्षाद्राग | १७ ४२४ |
| यदा प्रागुक्तमोक्षः स्यात् | १० २४९ | विचित्रचतुरो हस्तो | ८ १७३ |
| यदा मुडुपचारीभिर्नृत्ये | २० ५१३ | विचित्रभ्रमरो बालक्रीडासाधन | ८ १६८ |
| यदि प्रयोगो मेलापे | १६ ३९८ | विधाय नर्तनं | १७ ४३७ |
| यदोत्प्लुत्योक्तमोक्षश्चेत् | १० २४५ | विदध्यान्नर्तनं नानालयत्रय | २१ ५३७ |
| यदोल्लासलसद्गात्र | १४ ३५६ | विदध्यान्नर्तनं सम्यक् | १९ ४९२ |
| यस्य गीतस्य यो | १३ ३२७ | विद्युद्भ्रान्तं ततश्चन्द्रवर्तनामनि | ७ १५२ |
| यावनीभाषया युक्तं | २१ ५३७ | विद्युद्विलासितं वात्यावर्तितं | १० २३९ |
| युक्तायुक्तैर्नृत्तहस्तैः | १९ ४८६ | विरामसाम्यगतिभिर्लयैर्नाना | १९ ४७६ |
| युगपत् स्फुरणात् | ५ १२२ | विलम्बितोच्चारमानं | १७ ४२८ |
| येन येनेह गीतेन | १४ ३६१ | विलम्बितैकताली च | ९ २२२ |
| रक्षातालः सुयतिवान् | ८ १७२ | वैष्णवं च हयक्रान्तं | ६ १३० |
| रङ्गं प्रविश्य | १७ ४२० | वैशाखमण्डलालीढप्रत्यालीढ | १६ ४०३ |
| रङ्गपीठस्य मध्ये | २ २७ | वैशाखरेचितं तत्र बाहू | ४ ६१ |
| रङ्गमध्यमनुप्राप्य चार्या | ५ ८८ | व्यावर्तनाद् बहिश्चान्तस्तदा | ५ १०९ |
| रञ्जकाय वदेत् | २ ३२ | व्यावर्तयेत् तमेवाङ्घ्रि | १३ ३२२ |
| रथचक्रैकपादेन परेण | ७ १४२ | व्यावर्तितौ लताहस्तौ | ३ ४० |
| रसभावाङ्गदृष्ट्याद्यैर्भावनेरिः | १९ ४८८ | व्योम्नि निःशङ्कदिङ्भ्यां | १२ २८९ |
| रागालापानुगां | ३ ४८ | शनैरुच्चालितौ पादौ | ५ १११ |
| रायरङ्गालुरुक्तान्त्यस्तत् | ११ २५७ | शब्देन तेनकैशब्दखण्डेन | १४ ३५३ |
| रायरङ्गालुरुक्तान्यो | ११ २६३ | शिरोदृक्करपादानां युगपद् | ३ ५२ |
| रेखा सौष्ठवलास्याङ्गैः | १६ ४०४ | शास्त्रसङ्गकथावृत्तिश्चेत् | १६ ३९२ |
| रेखा सौष्ठवसंपन्नः स | ७ १४५ | शिगितिरः खलुखलुश्चेति | १६ ४११ |
| लङ्घयेदङ्घ्रिणान्येन प्रोक्ता | १२ २८३ | शुकतुण्डेन हस्तेन | १४ ३३५ |
| लयतालविचित्राङ्गैर्यतिनृत्तं | १९ ४७९ | शुद्धचालि च तव | ४ ८५ |
| ललाटतिलकं पश्चात् | ७ १५३ | शैवाख्यस्थानकेनापि | १४ ३३९ |

शोभितं यत्र दिग्भावैश्चित्रं ७ १६४
शृङ्गाररसभावाढ्यं रागताल १८ ४५२
श्रीरङ्गाद्या विप्रकीर्णास्तथा १५ ३६८
षड्गादन्यतमः सोऽत्राभिनेयो १३ ३२८
षड्भिरङ्गैश्चतुर्भिर्वा ८ १८१
षष्ठो दिशं ४ ८१
स एव द्रुतमानेन १९ ४८८
सङ्कीर्णनेरिर्भावादिर्नैरिश्च १८ ४६७
सप्तसप्तकराक्रान्तस्थानं २ ११
सप्तमीं दिशमासाद्य ४ ७२
समतालप्रयोगेण यतिभेदेन ७ १६७
सबालमकरा लास्यश्चारी ७ १५८
सभासंमुखतो हस्तौ ४ ६६
समत्रिभागलान्तानां प्रत्येकं ९ २०१
समद्विभागलान्तानां प्रत्येकं ८ १८८
समपादेन च स्थित्वा ६ १२६
समपादे स्थितं २१ ५२९
समस्तैरथवा व्यस्तैस्तत् १४ ३५०
समानमात्रलान्तैश्च ८ १८२
समां कृत्वा समनखं ४ ६०
समुच्चरति षड्गादिमगणादि १३ ३१५
समौ पादौ यदान्यस्मिन् १२ २९२
सर्वे घर्घरभेदास्ते १६ ४१३
सविलासं मन्दमन्दं ३ ३६
सव्यापसव्यतः पश्चाद् ५ ९०
सव्यापसव्ययोरूर्ध्वक्रियया ५ ११३
सव्यापसव्ययोस्तत्र वसुताला ९ १९७
सव्यापसव्ययोर्यत्र १९ ४९३
सव्यापसव्ययोर्हस्तपादयोः ९ २१०
सशब्दघातभेदैश्च पुरतः २२ ५५७
सशब्दा च क्रिया २१ ५४१
सक्षिप्रगजलीलाश्च वर्तना ९ २१९
सा एवायुतसंयुक्तहस्तैः १९ ४८४
सा पट्टिः कथिता १७ ४३०
सा धरू कथिता धीरैः १६ ४१६
सार्थाङ्गं नृत्यवन्नृत्येन्निरर्थाङ्गं १५ ३७०
सूलुपूर्वं यदोत्प्लुत्य १२ २८०
सूलुं बद्ध्वा ११ २७६
सूलुं बद्ध्वैकपादेन ११ २७८
सूलुचालनकं तत्र ३ ५५
सूलुपूर्वं तदा ११ २८५
संकीर्णानेकगतिभिः प्रवृत्तं ८ १७७
संकीर्णानेकगतिभिः प्रवृत्तं २० ५०३
संप्रदायानुसरणं चिन्दुनृत्यं १६ ४०८
संहतात्पुरमुत्प्लुत्य १२ २९६
स्तम्भक्रीडनिका चारी मध्ये १० २३१
स्थितिर्यथेप्सिता तद्विग्रङ्कं ८ १६९
स्थितिदिग्भेदतो विद्युद्गतिवत् १० २२८
स्थानकेन विनिर्दिष्टो १४ ३४५
स्थापयेत् पूर्वपूर्वार्धं ९ २०८
स्थाप्यादिवर्णानङ्गेन भावान् १५ ३६३
स्यन्द्यपस्यन्दिताध्यर्धस्थिता १६ ४०२
स्यादक्षिभ्रूविकारादि १८ ४६३
स्वरमन्द्राद्यो गीतप्रबन्धा २ १८
स्वरमञ्चकनृत्यं १४ ३५७
स्वस्थाने च तृतीये च ९ २०३
स्वसव्यक्रमतो नृत्वा २ २४
स्वर्णादिधातुबद्धान्तौ सरलौ २१ ५५२
हस्तबाह्वङ्घ्रिभिः ८ १८०
हस्तेन करिहस्तेन १४ ३४६
हस्तयोः पादयोस्त ९ २०९
हस्तैरभिनयेदर्थान् १५ ३६४
हंसपक्षकरो यत्र ९ २१३
हंसास्याभिधहस्तेन १३ ३३२
हंसीं च कुक्कुटीं ५ १०४
हावभावादिसुलयतालादिगति १४ ३५५
होर्मयीकर्तरीपूर्वं कार्तरी १२ २९९
होर्मयी चोक्तमुक्तिः ११ २६७
हृदान्तःस्थितपाठीनो ६ ११४

# पारिभाषिकाणां शब्दानामनुक्रमणी ।


| | पङ्क्त्यङ्क | पृष्ठाङ्क |
|---|---|---|
| अग्रतलसञ्चर | ५० | ३ |
| अङ्गन | ३१ | २ |
| अङ्गीकृत | ९७ | ५ |
| अञ्जलिकर | ८६ | ४ |
| अडालु | २५७, २५९, २६४, २७२, २७७ | ११ |
| अदृष्टपृष्ठतुल | १३८, १७४, १७५ | ६, ८ |
| अर्हिक | ४१९ | १७ |
| अधस्तल | १३२ | ६ |
| अधोमुख | ९६ ३३६ | ५, १४ |
| अनिबद्ध | ५३६ | २१ |
| अनिबन्ध | १३ | २ |
| अनिबन्धनृत्त | ५६३ | २२ |
| अपस्यन्दित | ४०२ | १६ |
| अभिनेय | ३२८ | १३ |
| अर्धचन्द्र | ३३३, ५२९ | १३, २१ |
| अर्धरेचित | ८३ | ४ |
| अलगंढ | २७४ | ११ |
| अलपद्म | ३२९ | १७ |
| अलपल्लव | ९५, ९९, १५०, ३४१, ५०८ | ५, ७, १४, २० |
| अश्वक्रान्ता | ३३६ | १४ |
| अहिफणाकार | ४० | ३ |
| आलाप | ४२० | १७ |
| आलीढ | १५५, ४०३ | ७, १६ |
| आवर्त्तचारी | ८० | ४ |
| आविद्ध | ३३, ७६, २२२, २२९ | ३, ४, ९ |
| आहति | ४०९ | १६ |

| | पङ्क्त्यङ्क | पृष्ठाङ्क |
|---|---|---|
| इङ्गन | ३१ | २ |
| उत्कमुक्तिः | २५१ | १० |
| उत्कटस्थ | ४९९ | १९ |
| उत्सव | ५४७ | २१ |
| उद्ग्राह | ४४०, ४५५, ५४३ | १७, १८, २१ |
| उद्वेष्टित | ६५, ९६ | ४, ५ |
| उरुप | १३६, १४६ | ६, ७ |
| उरुपाणि | १६, २३४ | २, १० |
| उरुवेणी | २२६ | १० |
| उरोवर्त्तित | २२७ | १० |
| उर्ध्वसञ्च | ४५, ५९ | ३, ४ |
| ऋषि | ८७ | ५ |
| कटिस्थ | ३३३ | १३ |
| कटीच्छिन्न | ३३९ | १४ |
| कमल | ४७० | १८ |
| कमलवर्त्तनि | १०२, १०७ | ५ |
| कर | ७० | ४ |
| करण | ७८, १५४, ५२५, ५२६ | ४, ७, २० |
| करणनेरि | १३७, १४८, १५६ | ६, ७ |
| करणपूर्वक(नेरि) | १५५ | ७ |
| कराङ्घ्रि | २०२ | ९ |
| करिहस्त(क) | ६४, १७१, ३४६ | ४, ८, १४ |
| करुणा(दृष्टि) | ३३५ | १३ |
| कर्णाट(भाषा) | ४२९ | १७ |
| कर्तरी | १३९, २२८, २२९ | ६, १० |
| कट्टङ्डि | ४३८ | १७ |

| | | |
|---|---|---|
| कट्टाडघरू | ४१७, ४१८ | १६, |
| | ४४३ | १७ |
| कलविंक | २३८, २४५ | १० |
| कलास | ३९१ | १६ |
| कलासत | ४३१ | १७ |
| कलासशब्द | ४३६ | १७ |
| कलादि | ५३८ | २१ |
| काङ्गूल | ३४३ | १४ |
| कातरा | ८७ | ५ |
| किङ्किणिकावाद्य | ४०९ | १६ |
| कुक्कुटासन | २९१, २९७ | १२ |
| कुक्कुटी | १०४ | ५ |
| कुडुक | ६ | २ |
| कुडुप | ४७१ | १८ |
| कुरङ्गी | ११८ | ६ |
| कुलीरिका | ६२, २१३ | ४, ९ |
| कैमिरू | ३९१ | १६ |
| कैमुरू | ४२५, ४३२ | १७ |
| कैवर्तन | ४६९, ४९४, ४९५ | १८, १९ |
| कोलचारिक ?) | ३७४, ३९३ | १५, १६ |
| कोलचारीचिन्दु | ३९४ | १६ |
| कौक्कुटी | ८५, १२३ | ४, ६ |
| क्रम | २२०, ४१८ | ९, १६ |
| क्रीडा | १५७ | ७ |
| खञ्जनी गति) | १०४, १२५ | ५, ६ |
| खटका | ७९ | ४ |
| गज | २४१, २६१ | १०, ११ |
| गजगामिनी | १०४ | ५ |
| गजर | ४ | २ |
| गजलीला | १२७ | ६ |
| गणेश | ८ | २ |
| गति | ४९, १२८, १४३, | ३, ६, ७, |
| | १७१, २२६, २३२ | ८, १०, |
| | २३५, ४७८, ४८२, | १४ १९, |
| | ४९३, ५०३, ५१६, | २०, |
| | ५३४ | २१ |
| ग्रहस्वर | ३२७ | १३ |
| गान्धार | ३३७ | १४ |
| गीत | १८, ३२७, ३५९, | २, १३, |
| | ३६१, ४२२, ५३७, | १४, १७, |
| | ५४४, ५६० | २१, २२ |
| गीतनृत्त | ३६६, ३७१ | १५ |
| गीतपद्धति | ११८ | ६ |
| गीतमुद्रा चिन्दु) | ३७५, ३९५, | १५, |
| | ४०१ | १६ |
| गीर्वाण (भाषा) | ४५० | १८ |
| गुण्डाल | ४७०, ५०६, | १८, |
| | ५०७ | २० |
| गुरु | ८७ | ५ |
| गोपुच्छ | १५७ | ७ |
| घर्घर | ३०९, ४११, ४१२, | १६, |
| | ४१३, ४३५ | १७ |
| घर्घरी | ५२३ | २० |
| चक्र | ३०४, ३११ | १२ |
| चक्रबन्ध | १८६, १९२ | ८, ९ |
| चक्रभ्रमरि (का) | २४४, २४६, | १० |
| | २४८, २५०, ३११ | १३ |
| चट्टु | ५३४, ५३५ | २१ |
| चट्टुक | ४७१ | १८ |
| चतुर | ३२९ | १३ |
| चतुरस्र | ५६, ५७, ८२, १४१, | ३, ४ |
| | १४७, ३१६ | ७, १३ |
| चन्द्र | २३, ३५ | २, ३ |
| चन्द्रवर्त | १५२ | ७ |
| चरण | ३२० | १३ |
| चामर | ५५४ | २१ |
| चारी | २३, ५०, ५८, ७१, | ३, ४, ५, |
| | ७६, ८३, ८७, ८८, | ६, ९, |
| | १३५, २२३, २३१, | १४, २२ |
| | ३३७, ५५९ | |
| चारुपाट | ४०६ | १६ |
| चालन | ३६, ३९, ६०, ८१ | ३, ४ |

| | | |
|---|---|---|
| चालि | १७ | २ |
| चित्र | १३७, १६४, १६५, | ६,७,१२, |
| | २९३, ४३२, ५५९ | १७, २२ |
| चित्रकलास(क) | १३३ | ६ |
| चित्रित | ५५३ | २१ |
| चिन्दु(क) | १८, ३७२, ३७४ | २, १५, |
| | ३७५, ३९०, ३९३, | १६ |
| | ३९५, ३९७, ४०८, | |
| | ४१४ | |
| छन्नभ्रमरि (का) | १४८ ३०४, | ७, १२, |
| | ३१० | १३ |
| छुरिका | ५५५ | २१ |
| जक्कडी | ५४२, ५४४, | २१ |
| | ५५५ | |
| जलकीट | २२० | ९ |
| जानुकुञ्चितक | ६७ | ४ |
| जारमान | २१५ | ९ |
| झंपाताल | १५० | ७ |
| डांटु(क) | २४४, २४६, | १०, |
| | २४८, २५०, २५२, | ११, |
| | २५५, २६०, २६२, | १२ |
| | २६४, २६६, २७३, | |
| | २८५, २८६ | |
| डिट्टु | २९९ | १२ |
| ढेंकि | २९३ | १२ |
| तण्डु | ८ | २ |
| तन्त्री | ४३३ | १७ |
| तलपुष्पपुट | ८९ | ५ |
| तलमध्य | ४५ | ३ |
| तलमुख | ७१ | ४ |
| तलविलासित | १५१ | ७ |
| तलसञ्च | २१५ | ९ |
| ताण्डव | २४० | १० |
| तान | ३५९ | १४ |
| तार्क्ष्य | २३८ | १० |
| तार्क्ष्यपक्ष | २४७ | १० |

| | | |
|---|---|---|
| ताल | ३२, ४७, १३५, १४१, | २,३,६, |
| | १६३, १७६, १७८, १८१, | ९, १३, |
| | १८४, १८७, १९१, १९४, | १४,१७, |
| | २००, २११ ३२४, ३५५, | १८,१९, |
| | ३६०, ४२१, ४३३, ४३५, | २०,२२ |
| | ४४६, ४४८, ४५२, ४७५, | |
| | ४७९, ४८१, ५०६ ५६० | |
| तालग्रह | ३६५ | १५ |
| तालधारिणी | ३१४ | १३ |
| तालयुजा | ३५१ | १४ |
| तालरूपक | ५०३, ५०४ | २० |
| तिरप | ३०४ | १२ |
| तिरपभ्रमरी | २६०, २६२, २६४, | ११,१३ |
| | २६६, ३०८ | |
| तिरुवणि | ३७४ ३८४ | १५ |
| तिरुवणिचिन्दु | ३८५ | १५ |
| तिर्यक्करण | ५२८ | २० |
| तिर्यङ्मुखा | ८३, १६१ | ४, ७ |
| त्रिपताक | ९८, १२४, १६२ | ५,६,७ |
| त्रिविक्रम | ३०९ | १३ |
| त्रिसञ्च | १५९, १६३ | ७ |
| तीवटि | ४७५ | १९ |
| तुल्ल | १३९ | ६ |
| तुर्ले | २१८, २२१ | ९ |
| तैलङ्ग(देश) | ४३८ | १७ |
| तैलङ्ग(भाषा) | ४१५ | १६ |
| तोलरूप | १३८, | ६ |
| दण्ड(क) | ५५०, ५५४, | २१,२२ |
| | ५५५, ५६२ | |
| दण्डपक्ष | १५१ | ७ |
| दण्डरास | ५६१ | २२ |
| दलरूपि | २०० | ९ |
| द्राविड(देश) | ३७२ | १५ |
| द्राविड(भाषा) | ३७६ | १५ |
| दिक्स्थान | ३४९ | १४ |
| दिंडिक | २७५, २८८, २८९ | ११,१२ |

| | | |
|---|---|---|
| द्विशिखर | ४२ | ३ |
| द्विष्टकपृष्ठक | १४६ | ७ |
| द्वेव | ८७ | ५ |
| द्रुत | १८२, ४३१, ४४८, ४९०, ४९१ ५०२, ५०५ | ८,१७, १८,१९, २० |
| धनुःकर्ष | ८० | ४ |
| धरू | १९, ४१६, ४२६, ४४४ | २, १६, १७ |
| धरूकट्टडि | ४४२, ४३ | १७ |
| धरूनृत्य | ४४९ | १८ |
| धीर | ३४० | १४ |
| धुत | ३४१ | १४ |
| धुवाड(डा) | १६, १७९, २३६, २३७, २६८ | २, १०, ११, ८ |
| ध्रुव(क) | ३५३, ३९८, ४०० | १६, १४ |
| ध्रुवपद | १९, ४६५, ४७६, ४५५, ४५६, ४६२ | २, १५, १८ |
| ध्रुवशाम्य | ५४१ | २१ |
| धैवत | ३४५ | १४ |
| ध्वनिपेशल | ४३५ | १७ |
| नटी | ४२७ | १७ |
| नडनेरि | ४६८, ४९०, ४९१ | १८, १९ |
| नतजानु | ५११, ५१२ | २० |
| नत्रक | १३७, १६८, १६९, १७० | ६, ८ |
| नर्तन | ४२०, ४२७, ४३२, ४३४, ५३९ | १७, २१ |
| नर्तनाभरण | २४०, २५५ | १०, ११ |
| नभ्रपृष्ठ | ५३२ | २१ |
| नाग | ७ | २ |
| नागबन्ध | २०५, २०६ | ९ |
| नान्दी | ९२ | ५ |
| नामावली | ४६७, ४७६, ४७७ | १८, १९ |
| निबन्धक | १३ | २ |
| निबन्धनृत्य | ४६५ | १८ |
| निषाद | ३४७ | १४ |
| निःशङ्क | २४७, २४८, २५०, २५३, २५४, २६५, २७२, २८१, २८९ | १०, ११, १२ |
| नेरि | १३७, १४५, १४९, १५५, ४६७, ४६८, ४८२, ४८३, ४८६ | ६, ७, १८, १९ |
| नृत्त | १३, ४७६, ५४२ | २, १९, २१ |
| नृत्तहस्त | ४८६ | १९ |
| नृत्ततत्त्वज्ञ | ७४ | ४ |
| नृत्तज्ञ | २२ | २ |
| नृत्य | ३२६, ३५१, ३६२, ४३८, ४४५ | १३,१४, १७ |
| न्यास | ४३७ | १७ |
| पटव | ४१० | १६ |
| पट्टि | ४२६, ४३० | १७ |
| पण्डित | ५४३ | २१ |
| पताक | ९५, १०६, १३२, ३१८, ३३८ | ५, ६, १३, १४ |
| पताकहस्त | १४३ | ७ |
| पद्मकोश | २१९ | ९ |
| पद्मबन्ध | १९८, ९९, २०५, २०७ | ९ |
| पर | १४२ | ७ |
| परावृत्त | ३४४ | १४ |
| परिमण्डलित | ३३० | १३ |
| पलाशिगृध्र | २३३ | १० |
| पल्लव | ३४१ | १४ |
| पक्षिशार्दूल | २४२, २६५ | १०, ११ |
| पक्षिसालु | २७३, २८९ | ११, १२ |
| पाट(तः) | ८५, ४२१ | ४, १७ |
| पारसीक | ५४३ | २१ |
| पार्ष्णिरेचित | २२३ | ९ |
| पार्श्वरेचित | ६७ | ४ |
| पिडिवाट | ४१० | १६ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पिल्मिरु-रू | ३९१, ४४४; ४२५ | १६, १७ | भ्रमरिका | २३७, २४८, २५२, | १०, ११, |
| पिहित | २८६ | १२ | | २५८, ३०४, ३०६, | १२, |
| पुरण्डरी | ४७० | १८ | | ३०७ | १३ |
| प्रतिताल | २०४ | ९ | मकर | १०८ | ५ |
| प्रतिपाद | ४५४ | १८ | मकरवर्तन | १०१, १०९ | ५ |
| प्रत्यालीढ | ८१, १३०, ४०३, | ४, ६, | मणिबन्ध | १०६, ४९२ | ५, १९ |
| | ३४४ | १६ | मण्डी | ४४०, ५१३, ५१४ | १८, २० |
| प्रबन्ध | ४ | २ | मण्डप | १० | २ |
| प्रसर | १३९, २२४, २२५ | ६, ९ | मण्डल | ६३, ७७, ४०३ | ४, १६ |
| पृष्ठतुल्ल | १३८ | ६ | मण्डलभ्रमित | १०७ | ५ |
| बद्ध | ३७६ | १५ | मण्डलस्थान | ६८ | ४ |
| बन्धक | १३, १४, २० | २ | मण्डलाकृति | ११२, ५३२ | ५, २१ |
| बाल | १५८ | ७ | मण्डली | ५६० | २२ |
| बाह्यभ्रमरि | २५४ | ११ | मत्तकुक्कुट | १२२ | ६ |
| बिडुलागव | १६, २७१, ३०१, | २, ११, | मध्यदेशी | ४५० | १८ |
| | ३०३ | १२ | मध्यमस्वर | ३४० | १४ |
| बिन्दुचिन्दु | ३७३, ३८१, ३८२ | १५ | मयूरललित | ३३० | १३ |
| बीभत्स | ३४३ | १४ | मराल | ७६ | ४ |
| बीसं | २९५ | १२ | मरालगति | १६६ | ७ |
| ब्रह्मा | ३३४ | १३ | मराली | १२० | ६ |
| भरत | ८ | २ | मसृण | ५५३ | २१ |
| भानवीगति | ११३ | ५ | मातृका | ७ | २ |
| भाव | ३१७, ३२३, ३५५, | १३, १४, | मान | ४३१ | १७ |
| | ३६३, ४०५, ४२७, | १५, १६, | मायूरी | १११ | ५ |
| | ४५६, ४६४, ४६८, | १७, १८, | माला | ३७४ | १५ |
| | ४८८ | १९ | मालाचिन्दु | ३८६, ३८७ | १५ |
| भावनेरि | ४८८, ४८९ | १९ | मित्र | १३७, १५९, १६० | ६, ७ |
| भावाढय | ४५२ | १८ | मुक्तधरू | ४१७ | १६ |
| भित्र | १५७, १५९ | ७ | मुक्तिकाधरू | ४४८, ४९१ | १८ |
| भुजङ्ग | २३६ | १० | मुक्ति | २६७, ३९९ | ११, १६ |
| भैरूड | २६१ | १०, ११ | मुखचालि | १६, २२, १३४ | २, ६ |
| भ्रमण | ५३३ | २१ | मुंगर | २९७ | १२ |
| भ्रमरी | २३५, २५०, २५६, | १०, ११, | मुंगरणं | २७४ | ११ |
| | २६०, २६२, ३०६; | १२, १३, | मुड | ५१८ | २० |
| | ३१२, ३१३, ५१८, | २०, २१, | मुडप | ४७०, ५१५, ५१६, | १८, |
| | ५२५, ५४०, ५५९ | २२ | | ५१७, ५१९ | २० |

| | | |
|---|---|---|
| मुद्रा | ३७५ ३९५, ४०१ | १५, १६ |
| मुक्ति | ७ | २ |
| मुरज | ५४६ | २१ |
| मुरण्डरी | ४१९, ४२० | २० |
| मुरू | ४९७, ४९८ | १९ |
| मुरूक | ५०० | १९ |
| मुरूरट्ट | ४६९ | १८ |
| मुष्टि | ७९ | ४ |
| मेलन | ४३३ | १७ |
| मेलाप | ३७७, ३७९, ३९६, ३९८ | १५, १६ |
| मेलापक | ४ | २ |
| मैनवीगति | ११५ | ६ |
| मोक्ष | २४९, २५३, २५९, २६५, ४०० | १०, ११, १६ |
| मोक्षक | २६१ | ११ |
| मोक्षण | १३०, २५५ | ६, ११ |
| मृदङ्ग | ४३३ | १७ |
| यति | १३५, १६७, १७२, २३२, ३५१, ३५४, ४२८, ४६७, ४७९, ४८० | ६, ७, ८, १०, १४, १७, १८, १९ |
| यमक | ४५३ | १८ |
| यवन | ५४४ | २१ |
| यक्ष | ७, २३८ | २, १० |
| यावनीभाषा | ५३७ | २१ |
| रङ्ग | ११, १२, २१, ४२० | २, १७ |
| रङ्गपीठ | ९, २६, २७ | २, ५ |
| रङ्गभूषण | २४०, २५९ | १०, ११ |
| रङ्गमध्य | २८, ६५, ७६, ८८ | २, ४, ५, |
| रङ्गालु | २७९ | ११ |
| रट्ट | ५०० | १९ |
| रट्टमूरू | ५०१ | १९ |
| रथचक्र | १४२ | ७ |
| रवि | २३९ | १० |
| रविचक्र | १९८, १९२, १९३ १९४ | ८, ९ |
| रविसञ्चार | २५३ | ११ |
| रस | ४८८ | १९ |
| राग | ४८, ९२ | ३, ५ |
| रागमूर्ति | ४२४ | १७ |
| राय | २७३, २८९ | ११, १२ |
| रायरङ्गालु | २५७, २५८, २६३, २६६, २७२ | ११ |
| रास | १४१ | ७ |
| रिषभ | ३३४ | १३ |
| रेखा | ४०४, ४६१ | १६, १८ |
| रेचन | ५२ | ३ |
| रोलंबांग | २४१, २६३ | १०, ११ |
| लगदिड्डुक | ३०० | १२ |
| लगपाटक | ४१० | १६ |
| लताकर | ६९, २३ | ४, १० |
| लतावृश्चिक | १५३ | ७ |
| लताहस्त | ४०, ६८, ५३३ | ३, ४, २१ |
| लय | ३२ १३५, १४१, ३२४, ३५५, ४२१, ४४६, ४४८, ४७५, ४७९, ४८१, ५३९, ५६० | २, ६, ७, १३, १४, १७, १८, १९, २१, २२ |
| ललाटतिलक | १५३ | ७ |
| लक्ष्मी | ८ | २ |
| लावणी | ५३०, ५३१, ४७१ | १८, २१ |
| लास्य | १५८, ४२३, ४२७ | ७, १७ |
| लास्याङ्ग | ४०४, ४५९ | १६, १८ |
| वक्त्र | ७६ | ४ |
| वक्त्रहस्त | ३३ | ३ |
| वर्णक | ५५३ | २१ |
| वर्तना | २१९ | ९ |
| वसन्त | ५४७ | २१ |
| वसुताला | १९७ | ९ |
| वाणी | ८ | २ |
| वादक | ५४६ | २१ |

| | | |
|---|---|---|
| वादी | २६१ | ११ |
| वादीश | २४१ | १० |
| वाद्य | ५४६ | २१ |
| वानरक्रीडिता | २१५ | ९ |
| विचित्रगति | ४८२ | १९ |
| विद्युत् | २२८, २३९ | १० |
| विधूत | ३३८, ३४७ | १४ |
| विप्रकीर्ण | ८२ | ४ |
| विराम | ४७८ | १९ |
| विलम्बित | ४२८, ४८१ | १७, १९ |
| विलास | ४०५ | १६ |
| विष्णु | ९ | २ |
| विक्षिप्त | ४९६ | १९ |
| वैशाख | ६१, ४०३ | ४, १६ |
| वैष्णव | १३० | ६ |
| वृक्षवन्ध | २११ | ९ |
| वृक्षबन्धताल | २१२ | ९ |
| शब्द | ३५२, ३५३, ५४१ | १४, २१ |
| शब्दचालि | १७ | २ |
| शब्दनृत्य | ३२५, ३२६ | १३ |
| शास्त्र | ३९२ | १६ |
| शिखर | ३१६ | १३ |
| शिखरहस्त | १३१ | ६ |
| शिरितिर | ४११ | १६ |
| शिरिपिडी | ४१० | १६ |
| शुकतुण्ड | ३३५ | १४ |
| शुद्धचालि | ८५ | ४ |
| शुद्धबिन्दु(क) | ३७३, ३७७, ३७८ | १५ |
| शैवाख्य | ३३९ | १४ |
| श्रीरङ्ग | ३६८ | १५ |
| श्लिष्ट | १०७ | ५ |
| शृङ्गार | ४५२, ४६३ | १८ |
| सङ्कीर्ण | ४६८, ४८६, ५०३ | १८,१९, २० |
| सङ्कीर्णनेरि | ४८७ | १९ |
| सञ्च | ५९, १५९, १६३ | ४, ७ |
| सम | १५७, २८०, ३२१, ३३३, ३५९, ३६५ | ७, १२, १३,१४, १५ |
| समताल | १३७ | ७ |
| समपाद | ३३ | ३ |
| सन्धी | ५४९ | २१ |
| सव्यसूची | ५० | ३ |
| सव्यहस्तिकर | ६४ | ४ |
| सक्षिप्रगजलीला | २१९ | ९ |
| संप्रदाय | १०५, ४०८ | ५, १६ |
| साचिमण्डल | १२१ | ६ |
| सालगसूडक | ३६८ | १५ |
| सालङ्गनेरि | ४८४, ४८५ | १९ |
| सालङ्गपूर्वक | ४६७ | १८ |
| सालपल्लववर्तन | ५०८ | २० |
| सांप्रदायिक | २ | १ |
| सिंहप्लुत | २४२, २६७ | १०, ११ |
| सीलुक | १३८, २१५, २१७ | ६, ९ |
| सुलु | ३७, ३९, ५७, ६८, ७८, ८२, ८४, २२७, २३५, २६९, २७६, २७८, २८०, ४०५, ४२३, ४३५ | २,३,४, १०,११, १२,१६, १७ |
| सुलुप | ४३४ | १७ |
| सुलूपूर्व | २८५ | १२ |
| सुलूवर्तन | ४३, ६३ | ३, ४ |
| सुलूचाल | ५५ | ३ |
| सूची | ३२० | १३ |
| सूच्यर्द्ध | ३११ | १३ |
| सूच्यास्य | ९७ | ५ |
| सूडा | ३६७ | १५ |
| सूर्यमण्डल | ५३४ | २१ |
| सौष्ठव | ४०४ | १६ |
| स्तम्भक्रीडनिका | २३१ | १० |
| स्थान | ६२, ६३, ७७, १३५ | ४, ६ |

| | | |
|---|---|---|
| स्यन्दि | ४०२ | १६ |
| स्यन्दिता | ४०२ | १६ |
| स्वर | ३२३, ३३७, ३४२, | १३,१४, |
| | ३४८, ४३१ | १७ |
| स्वरभाषा | ५४३ | २१ |
| स्वरमञ्चक | ३५७ | १४ |
| स्वरमञ्चनृत्य | ३५८ | १४ |
| स्वराभिनय | ३४९ | १४ |
| स्वस्तिक | ५४, ५८, ७१, | ३, ४, |
| | १०६, २८२, ३०८, | ५, १२, |
| | ३३८ | १३, १४ |
| हयक्रान्त | १३० | ६ |
| हस्त | १३५, १५०, १७३, | ६, ७, |
| | २२२ | ८, ९ |
| हारिणीगति | ११९ | ६ |
| हाव | ३५५, ४०५, ४२७, | १४,१६, |
| | ४५६ ४६४ | १७, १८ |
| हास्य | ३४० | १४ |
| हिंगर | २९८ | १२ |
| होर्मयी | २४६, २४८, २५०, | १०, |
| | २५२, २५४, २५६, | ११, |
| | २५८, २६१, २६२, | १२ |
| | २६७, २७२, २८३, | |
| | २९९ | |
| होलुनाम | १३९. | ६ |
| होल्लु | २३३, २३४ | १० |
| हंसलील | २१३ | ९ |
| हंसपक्ष | २१३ | ९ |
| हंसास्य | ९८, ३३२ | ५. १३ |
| हंसिनीगति | १२१ | ६ |

## GLOSSARY

[ N. B. As said in the introduction, only one Ms. was available for the edition of this text, and so many obscurities have remained in it. Some of the terms which are probably Non-Indo-Aryan were discussed by me with my friend, Shri Ramanujacharya, who is a good scholar of the Southern dancing traditions. He was kind enough to explain some of these terms for which I express my thanks to him ].

**शब्दचालि** – Cārī movement with Śabdas ( sounds ).

**बिडुलागव** – One type of utplavana ( jumping ).

**चिन्दु** – a type of dance in South India.

**धरू** – Śabdam.

**पट्टि** – a kind of dance.

**सुलू** – a particular position in Dance.

**सारी** – Lāsya type of Kathakalī.

**नेरी** – a fundamental dance of Tāndava type.

**भित्र** – a fundamental dance of Lāsya type.

**चित्र** – a dance pose with Bhāva gīta.

**नग्रक** – Gatibhedam-a kind of dance.

**तुड़** – Talasañcara Sthānakam.

**सीलुक** – Vānarakriḍitam-an aṅgahāra pose.

**होलू** – Gṛdhralinaka-an aṅgahāra pose.

**भुवाडा** – pose in Bhramaṇas.

**चक्रबन्ध** – Bandhana used in the abhinaya of Śṛngāra.

**पिल्मिरू** – flute ( musical instrument).

**दिंडिक** – an instrument.

**दिंडु** – a sound from Diṇḍika.

**चिन्दु** – Dravidan dance ascribed to gods or goddesses in Daśarā.

**शुद्धचिन्दु** – a dance without melapāni.

**बिन्दु चिन्दु** – Dance with melapāni.

**तिरुवणीचिन्दु** – Dravidian śabdas ascribed to some king.

**फलास** – the last tāla in the series of Tālas.

Some parallel verses occuring in Bharatārṇavam*-an unpublished work attributed to Nāndikes'vara.

अ. ३. नृत्याध्याय--

सशब्दा च क्रिया यत्र ध्रुवशं यादि भेदतः ।
यत्र चेष्टा विरहितं तन्नृत्यं जक्कडी मतम् ॥

( Compare नृत्तसंग्रह Page 21, V. 3 )

तालग्रहानङ्घ्रिपदैः समादिश्य यथोचितम् ।
अनेनैव प्रकारेण गीतनृत्यं समाचरेत् ॥

( Compare नृत्तसंग्रह Page 15 V. 4 )

पादाभ्यां दर्शयेत् तालं लयाच्छब्दाक्षराण्यलम् ।
नृत्येत् तदा शब्दनृत्तं नृत्तवद्भिरुदीरितम् ॥

( Compare नृत्तसंग्रह Page 13 V. 6 )

समपादे स्थितं पात्रं कटिन्यस्तार्धचन्द्रकम् ।
कटेरुपरि तत्कायं भ्रामयेल्लावणी तदा ॥

( Compare नृत्तसंग्रह Page 21. V. 1 )

मुरजादिषु वाद्येषु वाद्यमानेषु वादकैः ।
कुतूहलाय भूपानां वसन्ताद्युत्सवेषु चेत् ॥

( Compare नृत्तसंग्रह Page 21. V. 1 )

Comparable verses from the Bharatakośa*

अड्डालहुरुमयी - स्थललागनृत्तम्--

अडालाद्या हुरुमयी वामपादेन भूतले ।
यदा तिष्ठेन्निगदिता गणने तण्डुना तदा ॥ वेदः

( See Bharatakośa P. 9. and
Nṛttasamgraha अडालुहोर्मयी P. 11 )

करणनेरिः - देशीनृत्तम्--

सिंहाकर्षं चावहित्थं निवेशं चैलकादिके ।
क्रीडितं च तुरीयं स्याज्जनितं पञ्चमं तथा ।
षष्ठं चोपसृतं प्रोक्तं तलसंघट्टितं ततः ।
उद्वृत्तं चाष्टमं प्रोक्तं विष्णुक्रान्तं च लोलितम् ।
मदस्खलितसंभ्रान्ते विस्रम्भोद्घट्टिते ततः ।
प्रान्ते तलविलासं च प्रोक्तं पञ्चदशाभिधम् ।
रासतालेन मानेन मध्यमेन मनोरमः । वेदः ।

* I am indebted to Śri Rāmānujāchārya for finding out these verses from the manuscript in his possession.

* Ramakrishna Kavi, M.A. T. T. D. Press, Tirupati, 1951.

एतदन्यथोक्तं देवेन्द्रेण, यथा--

करणैः पञ्चदशभिर्युक्तः करणनेरिकः ।
सिंहाकर्षितमादौ स्यात्ततस्तलविलासितम् ।
वृश्चिकं च ततः प्रोक्तमन्यद्वृश्चिककुट्टितम् ।
लतावृश्चिकसंज्ञं स्याद्दण्डरेचितकं ततः ।
दण्डपक्षं चोर्ध्वजानु तलसंस्फोटिताभिधम् ।
विद्युद्भ्रान्तं दण्डपादं ललाटतिलकाभिधम् ।
एतानि द्वादशोक्तानि पूर्वेषां मततो यथा ।
जानुवेष्टनसंज्ञं च कराङ्घ्रिस्वस्तिकं तथा ।
अन्तश्च्छायाभिधं प्राहुस्त्रीणि पद्धतिकोविदाः । देवेन्द्रः ।

( See Bharatakośa P. 112 and
Nṛattasamgraha P. 7 Lines 150-155 )

कलासः - देशीनृत्ताङ्गम्--

विविधैः पाटशब्दैश्चालङ्कृतं यतिमिश्रितम् ।
मध्ये पिल्लमुरुयुक्तं ग्रहश्चापि मनोहरम् ।
कलासरूपकं प्रोक्तं सङ्गीतज्ञैः पुरातनैः । वेदः ।

( See Bharatakośa P. 112 and
Nṛttasamgraha P. 16 Line 391 )

कातरा - देशीचारी--

नन्द्यावर्तस्थितौ पादौ पश्चाच्चेदपसर्पतः ।
सा चारी कातरा प्रोक्ता देशीनृत्तविचक्षणैः । वेमः ।

( See Bharatakośa P. 126
Nṛttasamgraha P. 5 Line 87 )

कुलीरिका - देशीचारी--

नन्द्यावर्ताभिधे स्थाने स्थितौ तिर्यक् प्रसर्पितौ ।
चरणौ यत्र तां चारीं कथयन्ति कुलीरिकाम् । वेमः ।

( See Bharatakośa P. 144 and
Nṛttasamgraha P. 4 Line 62 )

चक्रबन्ध - काडनृत्तम्--

पिण्डः स्याच्चतुर्दशभिर्बिन्दुभिरथ ऊर्ध्वतः ।
दक्षहस्ते ब्रह्मतालो ईडावान् वामहस्तके ॥
दक्षाङ्घ्रौ सिंहलीलश्च वामाङ्घ्रौ यतिशेखरः ।
सकृद्रूपं ब्रह्मताले स्यादीडावान् द्विवारतः ॥
सिंहलीलो द्विवारं स्यादेकधा यतिशेखरः ।
अधश्चोर्ध्वे पिण्डबिन्दौ स्यात्समाङ्गेन योजनम् ॥

एवं प्रथमखण्डः स्याद् द्वितीयमधुना ब्रुवे ।
इडावान् दक्षहस्ते च दक्षाङ्घ्रौ ब्रह्मतालकः ॥
वामाङ्घ्रौ सिंहलीलश्च तत्पाणौ यतिशेखरः ।
पूर्ववद्योजनं पिण्डं तृतीयं खण्डमुच्यते ॥
यतिशेखरतालस्तु दक्षपाणावलङ्कृतः ।
ईडावान् दक्षपादे च वामाङ्घ्रौ ब्रह्मतालतः ॥
वामहस्ते सिंहलीलः चतुर्थं रूपमुच्यते ।
दक्षपाणौ सिंहलीलो दक्षाङ्घ्रौ यतिशेखरः ॥
ईडावान् वामपादे च तत्पाणौ ब्रह्मतालकः ।
एवं चतुर्धा तालानां पिण्डे भवति योजनम् ।
चक्रबन्धेति विज्ञेयः काडस्तालविचक्षणैः ॥ वेदः ।

( See Bharatakośa P. 195 and
Nṛttasamgraha P. 8 Lines 180-185 )

**चित्रम् – करणम्–**

पादेन भ्रमरीं कुर्वन् भ्रामयेच्चापि मध्यमम् ।
हस्तौ च भ्रामितौ स्यातां करणं चित्रसंज्ञकम् ॥ देवणः ।

**चित्रम् – देशीनृत्तम् ( उडुपाङ्गम् )–**

चित्रं तत्साद्धर्धमानस्थानकेन गतिस्तथा ।
तिर्यङ्मुखा त्रिपताको मल्लिकामोदतालतः ॥
दक्षिणे च तथा वामे मकरौ हृदि चञ्चला ।
पूर्वमुक्ता गतिश्चान्ते तिरिपभ्रमरी भवेत् ।
तत्कराणं चमत्काराच्चित्रमित्यभिधीयते ॥ वेदः ।

( See Bharatakośa Pages 207-208 and
Nṛttasamgraha P. 7, Nines 160-165 )

**छत्रभ्रमरी – भ्रमरी–**

स्थितैकेनाङ्घ्रिणा भूमौ दण्डवच्चोत्क्षिपेत् परम् ।
सव्यावर्तं भवेद्यत्र सा छत्रभ्रमरी मता ॥ कुम्भः ।

( See Bharatakośa Page 217 and
Nṛttasamgraha Page 12-13, Lines 304-310 )

**जक्करी – देशीनृत्तम्–**

यवन्या भाषया युक्तं यत्र गीतं सुनिश्चलम् ।
कौलादिगजरायुक्तं महाङ्गेन विभूषितम् ॥
विदध्यान्नर्तनं नानालयत्रयविचित्रितम् ।
कोमलाङ्गैर्यदा नृत्यं भ्रमर्यादिविराजितम् ॥

सशब्दादिक्रिया यत्र भुवङ्गम्पादिमेवतः ।
यत्र चेष्टाविरहितं तन्नृत्तं जक्करी मतम् ॥

पारसीकैः पण्डितैस्तु उद्ग्राहः स्वस्वभाषया ।
यद्गीतं जक्करीसंज्ञं यवनानामतिप्रियम् ॥ वेदः ।

( See Bharatakośa P. 222 and
Nṛttasamgraha P. 21 )

जारमान – देशीनृत्तम् (उडुपाङ्गम्)-

उत्कटस्थानके तत्स्यात् खण्डसूच्यावर्नीव्रजेत् ।
आदितालेन वामोर्ध्वेत्रिपताकोऽथ दक्षिणः ॥

हस्तपार्श्वगतस्तिर्यक् त्रिपताकस्तथा त्विदम् ।
दक्षिणाङ्घ्रि द्विवारं स्याच्चतुरश्रं ततः श्रयेत् ॥

सव्यवामपताकौ च स्वे स्वे पार्श्वे प्रसारयेत् ।
गृहीत्वा तिरिपं पश्चादेवमङ्घ्रान्तरेण तु ॥

भवत्येवं सम्मुखं च सव्यास्यो दक्षिणां गतः ।
गृहीत्वा पूर्ववद्दक्षपादं वामस्तु संस्थितः ॥

तेनैवाङ्घ्रिन तिरिपस्ततो वाममुखो भवेत् ।
ततः सम्मुखमास्थाय समसूच्यां पताकयोः ॥

प्रसारणं तु हृदये शिखरद्वयमाचरेत् ।
पवं द्विवारं कृत्वा च दक्षपादं निवेशयेत् ॥

उपरिष्टाद्वामजानोर्दक्षिणावर्ततो भ्रमेत् ।
मण्डिभ्रमरिका सा स्यादेवमङ्घ्रान्तरे भवेत् ॥

ततो वामाङ्घ्रिसूचीं च वामपार्श्वे प्रसारयेत् ।
अलपद्मद्वयं दक्षपार्श्वतश्च प्रसारयेत् ॥

ततः सव्यपदे सूचीं सव्यपार्श्वे प्रसारयेत् ।
परिवृत्यालपद्मौ च वामपार्श्वे प्रसारयेत् ॥

अलपद्मस्वस्तिकं तद्विधाय वामपार्श्वतः ।
अलपद्मद्वयं दक्षपादसूच्या सहैव तु ॥

भ्रामयन्मण्डलाकारमुल्बणो वामपार्श्वतः ।
कृत्वा दक्षिणसूच्याश्च वलनत्रयमाचरेत् ॥

ततः पताकप्रसरं सव्यं कृत्वा तकारणम् ।
हृदि वामं च शिखरं तदा स्याज्जारमानकम् ॥ वेदः ।

( See Bharatakośa P. 229 and
Nṛttasamgraha P. 9, Nine 115 )

ढेङ्की - धावनलागनृत्तम्-

वामः पुरोऽपरः पार्श्वे पादौ तालद्वयान्तरे ।
पताकौ प्रसृतौ तिर्यक् स्थित्वा स्थित्वा तु धावनम् ॥
कुट्टनं वामपादस्योत्प्लुतिं कृत्वा पदद्वये ।
विरलावूर्ध्वगौ पादौ दक्षिणेन पदा पतेत् ।
भूमौ यदा तदा ढेङ्की कथिता पूर्वसूरिभिः ॥ वेदः ।

( See Bharatakośa P. 238 and
Nṛttasamgraha P. 12, Line 293 )

ताण्डवं - नृत्तम्-

आसारितादिभिर्गीतैरुद्धतप्रायवर्तितैः ।
करणैरङ्गहारैश्च निवृत्तं विषमैरिह ।
ताण्डवं तण्डुना प्रोक्तं नृत्तं नृत्तविदो विदुः । कुम्भः ।

( See Bharatakośa P. 243 and
Nṛttasamgraha P. 10, Line 240 )

तिरिपभ्रमरी - भ्रमरी--

अङ्घ्रिस्वस्तिकमादाय तिर्यग्भ्रमणतो भवेत् । कुम्भः ।
कुञ्चितं पादमुत्क्षिप्य पार्श्वेनाक्षिप्य पृष्ठतः ।
अन्याङ्घ्रेः स्वस्तिकं कृत्वा शरीरं भ्रामयेद्यदा ॥
तिर्यग्यद्दण्डपक्षाभ्यां यथा स्यात् स्वस्तिकच्युतिः ।
तिरिपभ्रमरीत्येषा तदा तज्ज्ञैर्निगद्यते ॥ ज्यायनः ।

( See Bharatakośa P. 251 and
Nṛttasamgraha P. 13 Line 308 )

तिर्यङ्मुखा - देशीचारी--

स्थानके वर्धमानाख्ये स्थित्वा पादौ प्रसर्पतः ।
सव्यापसव्ययोस्तूर्णं यत्र तिर्यङ् मुखा तु सा ॥ वेमः ।

( See Bharatakośa P. 251 and
Nṛttasamgraha P. 4-7, Lines 83-161 )

तिवटम् - देशीनृत्तम्--

नवर्जिततवर्गेण क्वचित्क्वचित् ।
निर्मितं बिन्दुना वर्ज्यमिति तादिग्रहोत्तमम् ॥
तालावृत्तानुगम्भीरैः तिवटं परिकीर्तितम् । वेदः ।

( See Bharatakośa P. 251-252 and
Nṛttasamgraha P. 19, P. 475 )

तुल्लम्—

सपादेनादितालेन धृत्या सव्यापसव्ययोः ।
स्वस्तिकीकृत्य जंघे चेद् भ्राम्येतां कर्तरीं जगुः ॥
राजतालेन तालेन नर्तनं सर्वदिङ्मुखम् ।
सौष्ठवाधिष्ठितं यत्र तत्तुल्लमभिधीयते ॥

( See Bharatakośa P. 847 )

तुल्लम् – देशीनृत्तम् (उडुपाङ्गम्)—

हृदये शिखरद्वन्द्वं कुञ्चिते स्थानके ततः ।
चतुरश्रे स्थानके च पर्यायेण पताककौ ॥
अधः प्रसार्य वामोऽङ्घ्रिः स्थाप्यस्तेन सहैव तु ।
वामोऽलपद्मः पुरतः प्रसार्याधः पताककः ॥
हृदये वामशिखरं प्रसृतं च पताककम् ।
दक्षिणे तुल्लमुद्दिष्टं आदितालेन सूरिभिः ॥ वेदः ।

( See Bharatakośa P. 255 and
Nṛttasamgraha P. 9, Lines 218-221 )

ध्रुवपदनृत्तम् – देशीनृत्तम्—

गीयमाने ध्रुवपदे गीते भावमनोहरे ।
नर्तनं तनुयात् पात्रं कान्ताहास्यादिदृष्टिजम् ॥
नानागतिलसद्भावमुखरागादिसंयुतम् ।
सुकुमाराङ्गविन्यासं दन्तोद्योतितहावकम् ॥
खण्डमानेन रचितं मध्ये मध्ये च कम्पनम् ।
यत्र नृत्यं भवेदेवं ध्रुपदाख्यं तदा भवेत् ॥
प्रायशो मध्यदेशीयभाषया यत्र धातवः ।
उद्ग्राहध्रुवकाभोगास्त्रय एते भवन्ति ते ॥
उद्ग्राहरहितं केचित् परे त्वाभोगवर्जितम् ।
उद्ग्राहाभोगरहितमन्वर्थमपरे जगुः ।
स्यादक्षिभ्रुविकारादिश्रृङ्गाराकृतिसूचके ॥ वेदः ।

( See Bharatakaśa P. 299 and
Nṛttasamgraha P. 15, Line 376 )

नडनेरिः – देशीनृत्तम्—

द्रुतमानादादितालाद् भूयो भूयो विवर्तनम् ।
लोलितं भ्रमरं यत्र नडनेरिः स उच्यते ॥ दामोदरः ।
संहतस्थानके सूलं गृहीत्वा शिखरं हृदि ।
कृत्वा तत्तत्सौष्ठवेन कुर्यात्तु तलदर्शिनी ॥

पताकौ पार्श्वयोः पश्चाच्छनकैश्च प्रसारयेत् ।
पुनः शनैः पताकौ च तावानीय शिरो हृदि ॥
कृत्वा ततो दक्षवामपर्यायेण द्विवारकम् ।
ततः पताकः प्रसरः कुर्याच्च तदनन्तरम् ॥
चतुर्दिक्षु प्रसरणं पताकस्य ततः परम् ।
पर्यायेण पञ्चपदी सूलू ग्राह्या पुनस्ततः ॥
पर्यायेण भ्रमिद्वन्द्वात्मकस्तु कृतकालतः ।
वामदक्षिणयोः पश्चात् पार्श्वयोस्तिरिपं भवेत् ।
ततस्तु मलकं कृत्वा विधेयं तु तकारणम् ॥ वेदः ।

( See Bharatakaśa P. 306 and
Nṛttasamgraha P. 19, Line 490 )

नत्रम् – देशीनृत्तम् ( उडुपाङ्गम् )—

नन्द्यावर्तं स्थानकं स्यान्मराला चारिका तथा ।
ललितो भ्रमरो हस्तो नत्रं स्यात् समतालतः ॥ वेदः ।

( See Bharatakośa P. 306 and
Nṛttasamgraha P. 8, Lines 168–169 )

नागबन्धः – नृत्तबन्धः—

योऽस्मिंस्तृतीयपङ्क्तेस्तु द्वितीयं स्थानमाश्रिता ।
नर्तकी तु द्वितीयस्याः प्रथमं स्थानमाश्रयेत् ॥
ततः प्रथमपङ्क्तेस्तु क्रमात् स्थानचतुष्टयम् ।
प्राप्य तुर्यं द्वितीयायाः तृतीयस्यास्तृतीयकम् ॥
क्रमाद् व्रजेदेवमन्या चरेद्विनिमयेन च ।
नागबन्धं समाचष्ट तं सङ्ग्रामधनञ्जयः ॥ वेमः ।

( See Bharatakośa P. 313 and
Nṛttasamgraha P. 9 )

नामावली – देशीनृत्तम्—

समे स्थित्वा स्थाने यदि भवति सूलू सुललिता,
करौ स्वान्ते कृत्वा रुचिरशिखरौ योगसहितौ ।
ततः पार्श्वे सव्ये प्रसरति लताख्ये यदि भवेत्,
करौ व्यावृत्यासौ हृदि शिखरतामेति सपदि ॥
पुरः पार्श्वतो दक्षवामौ पताकौ,
यदा प्रसृतौ तद्यक्षवामेऽलपद्मौ ।
कृतौ हंसवक्त्रौ पुरस्तौ विधेयौ,
करौ चालपद्मौ हृदिस्थौ पुनस्तौ ॥

भवेदादितालेन तत्कारपूर्वक्रमोयं सदा देवनामावलीनाम् ।
विनोदास्तु तासां सदा संप्रयुक्तश्चतुःपञ्चषट्खण्डकैः कोहलेन ॥
वेदः ।

( See Bharatakośa P. 327 and
Nṛttasamgraha P. 19, Lines 475-476 )

नेरिः – देशीनृत्तम्—

आदितालानुगं यत्र विलम्बितलयान्वितम् ।
रेखामुद्राप्रमाणाद्यं नानाकरविभूषितम् ।
द्विचत्रगभिमुखं नृत्तं नेरिरित्यभिधीयते ॥ दामोदरः ।

( See Bharatakośa P. 341 and
Nṛttasamgraha P. 19, Lines 481-482 )

पट्टिनृत्तम् - देशीनृत्तम्—

पदमेकं तालहीनं बद्धं त्रैलिङ्गभाषया ।
पूर्वस्वरोच्चार्यमाणं यदेकयतिसंयुतम् ।
पट्टिः सा कथिता तज्ज्ञैर्विदग्धानां मनोहरा ॥ दामोदरः ।

( See Bharatakośa P. 348 and
Nṛttasamgraha P. 17, Lines 426-430 )

पद्मबन्धः – नृत्तबन्धः —

स्थाने स्थिता द्वितीयस्यास्तृतीयं पदमाश्रयेत् ।
तृतीयायाश्चतुर्थं च चतुर्थ्याश्च द्वितीयकम् ॥
स्थानक्रमाद् व्रजेदेवं द्वितीया पङ्क्तिरिष्यते ।
तृतीयपङ्क्तेराद्यस्था द्वितीयाया द्वितीयकम् ॥
आद्यायाश्च तृतीयं च चतुर्थं च क्रमाद् व्रजेत् ।
एवं तृतीयपङ्क्तिः स्यादथ तुर्याद्यमाश्रिता ॥
तद्द्वितीयं पदं प्राप्य तृतीयायास्तृतीयकम् ।
द्वितीयायाश्चतुर्थं च क्रमाद्गच्छेदियं पुनः ॥
चतुर्थी पङ्क्तिरेवं तु चतस्रः पात्रपङ्क्तयः ।
मिथश्चरन्ति मिलिता एवं विनिमयात् पृथक् ।
तं पद्मबन्धमाचष्ट रूपनारायणो नृपः ॥ वेमः ।

( See Bharatakośa P. 354 and
Nṛttasamgraha P. 9, Lines 196-199 )

**पिल्लमूरू – देशीनृत्तम्—**

गीततालानुगो यत्र नानावाद्यविनिर्मितः ।
अल्पो यः शब्द खण्डो हि थां-तो-धि-दिग-णान्तकः ॥ वेदः ।

(See Bharatakośa P. 370 and
Nṛttasamgraha P. 17, Line 425)

**प्रबन्धनृत्तम्—**

षडङ्गादिप्रमाणेन प्रबन्धाख्यायसंमताः ।
कृता वाग्गेयकारैस्तु तेषां खण्डानुसारतः ॥
स्वराणां पाटशब्दानां तेनकानां लयेन च ।
संगीतोक्तक्रमेणैव पदानां भावदर्शनम् ।
ये प्रबन्धाः पुरा प्रोक्ताः तेषां नर्तनमाचरेत् ॥ वेदः ।

(See Bharatakośa P. 390 and
Nṛttasamgraha P. 2, Line 4)

**प्रसरम् – देशीनृत्तम् (उडुपाङ्गम्)—**

चतुरश्रस्थानके च शिखरद्वितयं हृदि ।
आविद्धवक्रहस्ताभ्यां पार्ष्णिरेचितयान्वितम् ॥
मध्यसञ्चेन प्रसरमादितालाच्च यद्भवेत् ।
सव्यः पताकः प्रसृतः पार्श्वे वामः पुरो गतः ॥
पताकः स्याद्विपर्यासादङ्गानां प्रसरे भवेत् ।
मण्डलस्थानके पार्श्वे पताकौ प्रसृतौ यदि ॥
तत्तत्स्थाने कुञ्चितके शिखरद्वितयं हृदि ।
समसूच्या भुवं गत्वा सौष्ठवेन यदा भवेत् ॥
पुनः पश्चात्प्रचलनमाविद्धप्रसृतौ करौ ।
व्यावृत्य पुरतः पश्चात् परिवर्तनतो भवेत् ॥
संहतस्थानके स्थित्वा भ्रमरीमाचरेत्ततः ।
प्रान्ते च चतुरश्रं स्यात् प्रसरोडुपमुच्यते ॥ वेदः ।

(See Bharatakośa P. 396 and
Nṛttasamgraha P. 9, Lines 222-225)

**बाह्यभ्रमरी – भ्रमरी—**

दक्षिणेनाङ्घ्रिणा स्थित्वा वाममङ्घ्रिं तु कुञ्चयन् ।
वामावर्तं भवेद्यत्र सा बाह्यभ्रमरी मता ॥ वेदः ।
सव्येतरेण पादेन स्थित्वा सव्याङ्घ्रिकुञ्चनात् ।
सव्यावर्तं भ्रमेद्यत्र सा बाह्यभ्रमरी मता ॥ कुम्भः ।

(See Bharatakośa P. 419 and
Nṛttasamgraha P. 11, Line 254)

मिश्रम् - देशीनृत्तम् ( उडुपाङ्गम् )—

कुञ्चिते स्थानके स्थित्वा यदा नूपुरपादिका ।
वामोऽधोमुखमंसास्यः अलपद्मः प्रकम्पितः ॥

पादः प्रसारिताग्रस्थः त्रिपताकः शिरः स्थितः ।
दक्षिणे प्राग्गतिर्नीत्वा तथा वामे च चारिवत् ॥

नूपुराङ्घ्रिविपर्यासाद्भ्रमरी रचिता यदा ।
क्रीडातालेन विहितं तन्मिश्रमभिधीयते ॥ वेदः ।

( See Bharatakośa P. 438 and
Nṛttasamgraha P. 7, Lines 157–159 )

मूरू - देशीनृत्ताङ्गम्—

हृदये वामशिखरं स्थाप्य सव्यपताककम् ।
दक्षपार्श्वे प्रसार्याथ दक्षिणावर्ततस्ततः ॥

भ्रमरीमाचरेत् पश्चादेकपादोपरि स्थितः ।
नम्रोभूत्वा त्रिपताकं पुरतश्च प्रसारयेत् ॥
हृदि वामं च शिखरं न्यस्य स्कन्धानतं शिरः ।

वलनद्वितयं कुर्यादन्ते स्याच्च तकारणम् ।
मूरूलक्षणमित्युक्तं सङ्गीतज्ञैः पुरातनैः ॥ वेदः ।

( See Bharatakośa P. 500 and
Nṛttasamgraha P. 19, Lines 497–498 )

रथचक्रा - देशीचारी—

स्थाने तु चतुरस्राख्ये स्थित्वा श्लिष्टौ परस्परम् ।
पुरतः पृष्ठतो वापि चरणौ चेत् प्रसर्पतः ।
यत्रैषा रथचक्राख्या चारी तु परिकीर्तिता ॥ वेमः ।

( See Bharatakośa P. 524 and
Nṛttasamgraha P. 7, Line 142 )

रायबङ्गालः - देशीनृत्तम् ।

सूलूं बध्वैकपादेन दक्षपादेन कुट्टनम् ।
तत उत्प्लुत्य चरणावूर्ध्वं च विरलीकृतौ ॥

अन्तराले भ्रामयित्वा निपतेद्धरणीतले ।
रायबङ्गालध्वाडोऽयं कथितः पूर्वसूरिभिः ॥ वेदः ।

( See Bharatakośa P. 550 and
Nṛttasamgraha P. 11, Lines 266–272 )

शब्दचाली(लिः) - देशीनृत्तम्—

प्राग्वत् कृत्वा स्थानहस्तौ मध्यसञ्चेन नर्तकः।
यत्र स्थित्वैकपादेन शब्दवर्णानुगामिनीम् ॥
गतिं नयेद् द्वितीयेन दक्षिणाध्वनि शोभनम्।
तद्वत्पादान्तरेणाथ क्रमेणैतद्द्वयोर्यदा ॥
पर्यायेण गतिं कुर्याद्वार्तिकादिषु पञ्चसु।
मार्गेष्वसौ शब्दचाली पण्डितैश्च निरूपिता ॥

अथवा

मार्गतालक्रमेणैव रासतालेन नर्तनम्।
शब्दचालिस्तथा प्रोक्ता लक्ष्यदृष्ट्या विचक्षणैः ॥ दामोदरः।

( See Bharatakośa P. 656 and
Nṛttasamgraha P. 2, Line 17 )

सङ्कीर्णनेरिः - देशीनृत्तम्—

स्थानैः संहतकादिषोडशमुखैश्चारीभिरासप्तभिः,
त्रिंशत्सप्तमितैर्युतैरमिलितैरन्यैस्त्रिभिर्हस्तकैः।
दृग्भेदैः करणैर्वरैरथशिरोभेदाङ्गहारैः स्फुटा,
सङ्कीर्णा गदिता बुधैर्नटमुदे नेरिर्मनोहारिणी ॥ वेदः।

( See Bharatakośa P. 691 and
Nṛttasamgraha P. 19, Line 487 )

सालङ्गनेरिः - देशीनृत्तम्—

सालङ्गनेरिः स ज्ञेयो युतायुतकरैः कृतः। वेदः।

( See Bharatkośa P. 723 and
Nṛttasamgraha P. 19, Line 484-85 )

सूलू - देशीनृत्तम्—

एकः समस्थितः पृष्ठे द्विवितस्तिः पुरः पुरः।
सूलूस्थानकमेतत् स्यादेवं चरणरक्षणा ॥
पुरतः परितो वामः पताकोऽन्यस्तु पार्श्वतः।
दक्षिणाभ्रमणात् सूलूं द्वित्रिवारं चरेत्ततः ॥
इति ध्वाडनृत्ते सूडुलक्षणम्। देवेन्द्रः।

( See Bharatakośa P. 737-38 and
Nṛttasamgraha P. 17, Line 436 )

सूलूपम् - देशीनृत्तम्—

किन्नरीतालसंयुक्तं तेन शब्देन नर्तनम्।
मृदङ्गादियुतं यत् स्यात् सूलूपं तन्निगद्यते ॥ दामोदरः।

( See Bharatakośa P. 738 and
Nṛttasamgraha P. 17, Line 434 )

***

# शुद्धिपत्रक

| | Read as | Line | Page |
|---|---|---|---|
| मव्यमो | मध्यमो | 810·1268 ( footnote ) | 1 |
| १३, ४० | १४, 40 | 40 | 3 |
| चायी | चार्या | 80 | 4 |
| ब्राह्म | बाह्य | 47 | 7 |
| कोप्पल | कोत्पल | 50 | 7 |
| सबालककर | सबालमकर | 62 | 7 |
| पक्षिसालुवः | पक्षिसुलवः | 73 | 11 |
| 56 | 55 | 55 | 11 |
| तदाडालु | तदाऽडालु | 77 | 11 |
| समुत्प्लुत्य | समुत्प्लुत्य | 90 | 12 |
| 65 | 95 | 95 | 12 |
| क्वचित् | क्वचित् | 399 | 16 |
| उरुपेष्वेपि | उरुपेष्वपि | 16 | 23 |
| Omit | * at the end | — | 24 |

*
* *

# राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

## प्रकाशित ग्रन्थ

१ प्रमाणमञ्जरी – तार्किकचूडामणि सर्वदेव। २ यन्त्रराजरचना – महाराजाधिराज जयसिंहदेव कारिता। ३ कान्हडदे प्रबन्ध – महाकवि पद्मनाभ। ४ क्यामखांरासा – नवाब अलफखां (कविवर जान)। ५ लावारासा – चारण कविया गोपालदान। ६ महर्षिकुलवैभवम् – विद्यावाचस्पति स्व. श्री मधुसूदनजी ओझा। ७ वृत्तिदीपिका – मौनि कृष्णभट्ट। ८ राजविनोद काव्य – कवि उदयराज। ९ तर्कसंग्रहफक्किका – क्षमाकल्याणगणी। १० नृत्तसंग्रह – अज्ञातकर्तृक।

## प्रेस में

१ त्रिपुराभारतीलघुस्तव – सिद्धसारस्वत लघुपण्डित। २ बालशिक्षा व्याकरण – ठक्कुर संग्रामसिंह। ३ करुणामृतप्रपा – महाकवि ठक्कुर सोमेश्वरदेव। ४ पदार्थरत्नमञ्जूषा – पं. कृष्णमिश्र। ५ शकुनप्रदीप – पं. लावण्यशर्मा। ६ उक्तिरत्नाकर – पं. साधुसुन्दर गणी। ७ प्राकृतानन्द – पं. रघुनाथ कवि। ८ ईश्वरविलासकाव्य – पं. कृष्णभट्ट। ९ चक्रपाणिविजयकाव्य – पं. लक्ष्मीधर भट्ट। १० काव्यप्रकाश – भट्ट सोमेश्वर। ११ कारकसंबन्धोद्योत – पं. रभसनन्दी। १२ शृंगारहारावलि – हर्षकवि। १३ कृष्णगीतिकाव्यानि – कवि सोमनाथ। १४ नृत्यरत्न कोश – महाराजाधिराज कुंभकर्णदेव। १५ नन्दोपाख्यान – अज्ञातकर्तृक। १६ चान्द्रव्याकरण – चन्द्रगोमी। १७ शब्दरत्नप्रदीप – अज्ञातकर्तृक। १८ रत्नकोश – अज्ञातकर्तृक। १९ कविकौस्तुभ – पं. रघुनाथ मनोहर। २० एकाक्षरकोशसंग्रह – विविधकविकर्तृक। २१ शतकत्रयम् – भर्तृहरि, धनसारकृत व्याख्यायुक्त। २२ वसन्तविलास – अज्ञातकर्तृक। २३ दुर्गापुष्पाञ्जलि – म. म. पं. दुर्गाप्रसादजी द्विवेदी। २४ दशकण्ठवधम् – म. म. पं. दुर्गाप्रसादजी द्विवेदी। २५ गोरा बादल पदमिणी चऊपइ – कवि हेमरतन। २६ बांकीदासरी ख्यात – महाकवि बांकीदास। २७ मुंहता नैणसीरी ख्यात – मुंहता नेणसी इत्यादि।

प्राप्तिस्थान – सञ्चालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर।